राजा सलहेस नाच

(लोकनाट्य)

स्वरूप, समाज और कलाकार

सेफगार्डिंग द इनटैंजिबल कल्चर हेरिटेज एंड डाइवर्स कल्चर ट्रेडिशन्स ऑफ इंडिया
मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के तहत।

प्रोजेक्ट ब्लू-प्रिंट

सलहेस नाच (लोकनाट्य) एवं कलाकारों का ऑडियो-वीजुअल डाटा संकलन

क्षेत्र

मधुबनी एवं मिथिलांचल, बिहार

रिपोर्ट

अंशुमाला, गाजियाबाद (यूपी)

स्कीम:

सेफगार्डिंग द इनटैंजिबल कल्चर हेरिटेज एंड डाइवर्स कल्चर ट्रेडिशन्स ऑफ इंडिया

मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया

के तहत।

राजा सलहेस

बिहार के मधुबनी जिला समेत संपूर्ण मिथिलांचल में कुछ कहावतें प्रसिद्ध हैं। जैसे- अगर आपको कहीं ऐसी जगह प्यास लगे, जहां पीने का पानी उपलब्ध नहीं हैं, तो आप सच्चे मन से और पूरी श्रद्धा से जय राजा सलहेस कहें तो कहीं से पानी का सोता फूट जाएगा ताकि आप अपनी प्यास बुझा सकें

सेफगार्डिंग द इनटैंजिबल कल्चर हेरिटेज एंड डाइवर्स कल्चर ट्रेडिशन्स ऑफ इंडिया

मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के तहत।

अथवा जब कहीं आप दुराचारियों से घिर जाएं तो आपको उनसे उन्हें परास्त करने में सक्षम हो जाएंगे। संपूर्ण मिथिलांचल में आपको ऐसे एक नहीं, अनेक लोक-उद्धरण मिल जाएंगे, अगर आप स्थानीय लोगों से राजा सलहेस की महिमा पर चर्चा करेंगे। मिथिलांचल में राजा सलहेस को चमत्कारी और देवीय शक्तियों का स्वामी माना जाता है। ऐसे में यह सवाल उठता है कि आखिर राजा सलहेस कौन हैं?

बिहार समेत समूचे भारतवर्ष में विद्यमान हजारों लोकदेवताओं में एक हैं राजा सलहेस। सलहेस राजा थे या लोग उन्हें स्नेह और प्यार से राजा बुलाते थे, इस पर विवाद है। यहां तक कि उनकी ऐतिहासिकता पर भी विवाद है, लेकिन मिथिलांचल की दुसाध जाति के नायक के रूप में उभरे सलहेस अपनी जातिगत सीमाओं से परे निकलकर संपूर्ण बिहार में निचली जातियों के नायक बन गए, इस कोई विवाद नहीं है। सलहेस ऐसे लोकनायक बनकर उभरे जिसने अगड़ी जातियों को चुनौती दी और उनपर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। लिहाजा, उन्हें अगड़ी जातियों का भी सम्मान मिला।

राजा सलहेस अपने मानवीय गुणों से ऊपर उठकर लोकदेवता के रूप में कैसे स्थापित हुए, इसका वर्णन भी सलहेस से जुड़ी लोकगाथाओं और लोकनाटकों में मिलता है। लोकनाटकों में कई जगहों पर उनके निजी जीवन के कई उच्च प्रतिमानों की चर्चा मिलती है, जिनकी वजह से उन्हें देवत्व की प्राप्ति होती है। मसलन, उन्होंने विवाह के उच्च आदर्शों को अपनाया और विवाहेत्तर संबंधों से परहेज किया। उन्होंने अपने समकक्ष कई दुराचारियों का नाश किया, गरीबों की रक्षा की। सलहेस लोकगाथाओं और लोकनाटकों में इनकी चर्चा मिलती है।

लोकनाट्य परंपरा में राजा सलहेस

राजा सलहेस बिहार में लोककला के विविध रूपों में एक साथ विद्यमान हैं, खासतौर पर मिथिलांचल में। मिथिला की चित्रकला, मूर्तिकला और संस्थापन कला में सलहेस किसी भी अन्य हिंदू देवी-देवताओं की तरह प्रमुखता से स्थापित हैं, खासतौर से कलाकारों की दलित शाखाओं पर। मिथिलांचल की दलित जातियों, मुख्यत: पासवानों और दुसाधों में सलहेस से जुड़ी लोकगाथाओं पर आधारित चित्रण या संस्थापन की परंपरा मिलती है।

लोकनाटकों में भी सलहेस दलित जातियों, मुख्यत: पासवानों और दुसाधों की थाति हैं। सलहेस लोकगाथाओं का मंचन करने वाले ज्यादातर लोककलाकार पासवान और दुसाध जाति के हैं। लेकिन, अपनी लोककला की थाती ये अपनी आनेवाली पीढ़ी को सौंपने के लिए उद्दत नहीं दिखते हैं। यही वजह है कि सलहेस लोकगाथाओं और लोकनाट्य से जुड़े कलाकारों की संख्या तेजी से सिमटती जा रही है।

ऐसे में यह जरूरी है कि सलहेस लोकनाट्य और लोकगाथाओं के साथ-साथ उस संस्कृति को

संभालने वाले कलाकारों की विस्तृत सूची तैयार की जाए, ताकि समय रहते उनका संरक्षण संभव हो सके। इसके लिए जरूरी है कि उन कलाकारों तक पहुंचा जाए जिन्होंने राजा सलहेस संस्कृति की पूरी विरासत अपने पास संभाल कर रखी है। उनके आख्यानों, गाथाओं और लोकनाटकों की पटकथा को उनकी इजाजत से रिकॉर्ड करने की आवश्यकता है।

सलहेस लोकनाट्य और लोकगाथाओं से जुड़े कलाकारों से यह जानने-समझने की जरूरत है कि मौखिक परंपरा के इन लोकनाटकों को अब तक समयानुरूप खुद को ढालने और विस्तार पाने हेतु तत्व किस प्रकार प्राप्त होते थे। इसे भी समझने की जरूरत है कि आखिर किन कारणों से सलहेस लोकनाट्य और लोकगाथाओं के मंचन से जुड़े कलाकार अपनी भावी पीढ़ी को इसे हस्थांतरित करने से गुरेज कर रहे हैं।

कार्ययोजना का स्वरूप

Activity	**Time frame**	**Geographical area**
सलहेस नाच (लोकनाट्य) एवं लोकगाथा के विविध आयामों का क्षेत्र में अध्ययन। सलहेस नाच (लोकनाट्य) एवं लोकगाथा का लिपिकरण। संबंधित नाच (लोकनाट्य) से जुड़े कलाकारों के क्षेत्र की पहचान एवं कलाकारों के बारे में जानकारी जुटाना। सलहेस नाच (लोकनाट्य) से जुड़े विशेषज्ञों से बातचीत।	फरवरी – जून (पार्ट-वन)	मधुबनी, दरभंगा, सुपौल एवं उसके आसपास के क्षेत्र
प्रचलित सलहेस नाच (लोकनाट्य) के स्क्रिप्ट्स का लिपिकरण राजा सलहेस नाच से जुड़े कलाकारों	सितंबर – मई	मधुबनी, दरभंगा, सुपौल एवं उसके आसपास के क्षेत्र

के बातचीत, डाटा तैयार करना। सलहेस नाच (लोकनाट्य) का ऑडियो-वीडियो डॉक्यूमेंटेशन सलहेस नाच से जुड़े कलाकारों की वर्तमान स्थिति पर नजर	(पार्ट-टू)	

संभावित परिणाम

1. सलहेस नाच टीमों की जानकारी
2. सलहेस लोकगाथा, लोकनाट्य का लिपिकरण
3. सलहेस लोकनाट्य का स्क्रिप्ट
4. सलहेस लोकगाथा से जुड़े विशेषज्ञों के इंटरव्यू
5. राज सलहेस पर 15 मिनट की डॉक्यूमेंट्री

संगीत नाटक अकादेमी Sangeet Natak Akademi
NATIONAL ACADEMY OF MUSIC, DANCE AND DRAMA
an autonomous body of the Ministry of Culture, Government of India
RABINDRA BHAVAN, FEROZE SHAH ROAD, NEW DELHI-110 001

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

1. **प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य**

   बिहार

2. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा का नाम (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में)**

   सलहेसक नाच, सलहेस लोकनाट्य

3. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण**

   मैथिली, वज्जिका, मगही, भोजपुरी

4. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा से स्पष्ट रूप से सम्बंधित प्रतिनिधि ग्राम, समुदाय, समूह, परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क (विवरण अलग से संलग्न करें)**

   बिसुनदेव पासवान, चिकना मधुबनी
   गंगाराम, उमगांव, मधुबनी
   जटाधर पासवान, चकदा मधुबनी
   मोहन पासवान, मनियारी, दरभंगा
   बुचरू पासवान- बैंक कॉलोनी, दरभंगा
   प्रफुल्ल कुमार मौन, महनार, वैशाली

5. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों की जीवंतता का विस्तारित भोगोलिक क्षेत्र**

   बिहार- मधुबनी, दरभंगा, सुपौल, सहरसा, मधेपुरा, बेगूसराय, भागलपुर, जहानाबाद, पटना, छपरा, समस्तीपुर

   नेपाल- जनकपुर, सिरहा, लहान, राजबिराज, बिराटनगर, महितारी, सपतारी, मोरंग

6. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा/उसका विवरण**

   - ✓ मौखिक परम्पराएं एवं अभिव्यक्तियाँ (भाषा इनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में है)
   - ✓ प्रदर्शनकारी कलाएं
   - ✓ सामाजिक रीति-रिवाज़, प्रथाएँ, चलन, परम्परा, संस्कार, एवं उत्सव आदि
   - ✓ प्रकृति एवं जीव-जगत के बारे में ज्ञान एवं परिपाटी व अनुशीलन प्रथाएं

   राजा सलहेस की नाट्य परंपरा उपरोक्त सभी कारणों का वहन करती है और लोकगाथा में उन्हें उनका समावेश है।

7. कृपया योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा का एक रुचिपूर्ण सारगर्भित संक्षिप्त परिचय दें।

बिहार के मधुबनी जिला समेत संपूर्ण मिथिलांचल में कुछ कहावतें प्रसिद्ध हैं। जैसे- अगर आपको कहीं ऐसी जगह प्यास लगे, जहां पीने का पानी उपलब्ध नहीं हैं, तो आप सच्चे मन से और पूरी श्रद्धा से जय राजा सलहेस कहें तो कहीं से पानी का सोता फूट जाएगा ताकि आप अपनी प्यास बुझा सकें अथवा जब कहीं आप दुराचारियों से घिर जाएं तो आपको उनसे उन्हें परास्त करने में सक्षम हो जाएंगे। संपूर्ण मिथिलांचल में आपको ऐसे एक नहीं, अनेक लोक-उद्धरण मिल जाएंगे, अगर आप स्थानीय लोगों से राजा सलहेस की महिमा पर चर्चा करेंगे। मिथिलांचल में राजा सलहेस को चमत्कारी और देवीय शक्तियों का स्वामी माना जाता है।

बिहार समेत समूचे भारतवर्ष में विद्यमान हजारों लोकदेवताओं में एक हैं राजा सलहेस। सलहेस राजा थे या लोग उन्हें स्नेह और प्यार से राजा बुलाते थे, इस पर विवाद है। यहां तक कि उनकी ऐतिहासिकता पर भी विवाद है, लेकिन मिथिलांचल की दुसाध जाति के नायक के रूप में उभरे सलहेस अपनी जातिगत सीमाओं से परे निकलकर संपूर्ण बिहार में निचली जातियों के नायक बन गए, इस कोई विवाद नहीं है। सलहेस ऐसे लोकनायक बनकर उभरे जिसने अगड़ी जातियों को चुनौती दी और उनपर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध की। लिहाजा, उन्हें अगड़ी जातियों का भी सम्मान मिला। इतना ही नहीं, उन्होंने निजी जीवन में उच्च आदर्शों एवं लोकहितकारी कार्यों से समाज में देवता के रूप में स्थापित हुए।

राजा सलहेस के जीवनवृंत को केंद्र में रखकर संपूर्ण बिहार और नेपाल के एक बड़े भू-भाग में उनकी लोकगाथाएं प्रचलित है और उन लोकगाथाओं को केंद्र में रखकर नाच खेला जाता है। इन नाचों की लोकप्रियता का आलम यह है कि यहां न केवल उनके प्रेक्षकों का हुजूम उमड़ता है बल्कि वह हुजूम में जातिप्रथा की कुरितियों की दीवारों को लांखकर नाच का मंचन देखता है। दुर्भाग्य से इस लोक संस्कृति का वहन कहने वाले कलाकार विपन्नता का शिकार हैं और अपनी अमूर्त परंपरा का कोश अपने साथ ही लिये विदा होना चाहते हैं।

8. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी कौन हैं ? क्या इन व्यक्तियों की कोई विशेष भूमिका है या कोई विशेष दायित्व है इस परम्परा और प्रथा के अभ्यास एवं अगली पीढ़ी को संचरण के निमित्त? अगर है तो वो कौन हैं और उनका दायित्व क्या है?

मुख्य रूप से दुसाध, चमार जाति के लोक-कलाकार ही सलहेस नाच परंपरा के अधिकारी और अभ्यासी हैं। हालांकि जानकारी यह भी मिली है कि इस लोकगाथा का मंचन और गायन मुसहर जाति के लोक-कलाकार भी करते हैं। इनमें से ज्यादातर कलाकार आज खेतिहर मजदूर है या मजदूर हैं और विपन्नता में जीवन-यापन करते हैं।

राजा सलहेस लोकनाच परंपरा के अभ्यास और उसके संरक्षण-संवर्धन में इन कलाकारों की महत्वपूर्ण भूमिका है। मसलन, अपने-अपने क्षेत्र में जब ये कलाकार मंचन करते हैं तो मुख्य गाथा से प्रेक्षकों को जोड़ने के लिए ये अपने आसपास के क्षेत्रों को गाथा का हिस्सा बना देते हैं। लेकिन, दुर्भाग्य से इन लोकगाथाओं का संपूर्ण पाठ आज नहीं मिलता है और न ही इस संबंध में कोई विशेष प्रयास हुआ है।

जाहिर तौर पर इस लोकगाथा के मूल पाठों के जुटान में इन कलाकारों की महत्वपूर्ण भूमिका बन सकती है और यह उनका दातित्व भी बनता है। लेकिन एक कहावत है कि भूखे पेट भजन न होई गोपाला यानी

इस लोगगाथा के ज्यादातार लोककलाकार विपन्न हैं, इस वजह से वो अपनी भावी पीढ़ी को अपनी लोकगाथा गायन परंपरा की थाती नहीं सौपना चाहते हैं। क्योंकि विविध कारणों से इस लोकगाथा के मंचन के अवसर सिकुड़ते और सिमटते जा रहे हैं।

9. ज्ञान और हुनर/कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्त्वों के साथ क्या अंतर सम्बन्ध है?

सलहेस नाच का मंचन करने वाले अथवा गाथा गायन करने वाले ज्यादातर कलाकार अशिक्षित है लेकिन जहां तक मंचन या गायन का सवाल है उसका उन्हें पूरा ज्ञान है। आश्चर्यजनक रूप से अपने इस लोकनाट्य के मंचन के दौरान आधुनिक साज-सज्जा के अभाव में भी अपनी संवाद अदायगी और भावभंगिमाओं से आधुनिक नाटकों जैसा संसार रचते हैं और समय और अवसर के मुताबिक लगभग सात वृहद खंडों की महागाथा के अंशों का संयोजन कर मंचन की पटकथा तैयार करते हैं। महागाथा के मंचन के दौरान दर्शकों को किस प्रकार बांधे रखना है और उसमें वर्तमान लोक-समाज और राजनीति की घटनाओं को पिरोकर उसमें रोचकता बनाये रखनी है, यह मंच पर मौजूद लोक-कलाकार भलिभांति जानता है। इस बारे में विस्तृत जानकारी रिपोर्ट में दी गयी है।

10. वर्तमान में सम्बंधित समुदाय के लिए इन तत्त्वों का सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन क्या मायने रखता हैं?

लोकगाथा राजा सलहेस या सलहेसक नाच का मंचन आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक तीनों की कारणों से महत्व रखता है।

आर्थिक कारण: राजा सलहेस के गाथा गायन, नाच और गीतीमय प्रस्तुतियों से लोक-कलाकारों एवं उसके परिवार की आय में अतिरिक्त सहायता मिलती है जो उनकी बड़ी तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मसलन, घर के निर्माण, बेटी की शादी या बीमारियों का इलाज आदि।

राजनीतिक कारण: कलाकारों से इतर यह आमलोगों को लिए यह भले ही लोक-मनोरंजन का बड़ा साधन हो, लेकिन दुसाध-पासवान एवं सलहेस को भगवान मानने वाली अन्य जातियां इन लोकगाथाओं और लोकनाटकों के जरिए विभिन्न मौकों पर अपनी जातीस्य अस्मिता के सवाल के साथ भी आमलोगों के समक्ष उपस्थित होती हैं। इसकी एक वजह तो यही है कि राजा सलहेस सामंती व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करने वाले नायक हैं, जिन्होंने अपने बल और अपनी बुद्धि से अगड़ी जाति के नायकों को परास्त कर उन पर दुसाध समाज की श्रेष्ठता सिद्ध की थी।

सामाजिक कारण: सलहेस उत्सव और गहवरों में उनकी पूजा-अर्चना के जरिए वह अपना सामाजिक एवं सामुदायिक दायका भी बढ़ाता है और नये संबंधों की शुरुआत भी करता है। इतना ही नहीं, इसके जुड़े सांस्कृतिक उत्सवों के जरिए दुसाध, चमार या मुसहर समाज अपनी राजनीतिक शक्ति का भी प्रदर्शन करता है।

11. क्या योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों में ऐसा कुछ है जिसे प्रतिपादित अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के प्रतिकूल माना जा सकता है या फिर जिसे समुदाय, समूह या फिट व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस पहुँचती हो या फिर वे उनके स्थाई विकास को बाधित करते हों. क्या प्रस्तावित योजना के बावत या फिर सांस्कृतिक परम्परा में ऐसा कुछ है जो देश के कानून या फिर उनसे जुड़े समुदाय के समन्वय को या दूसरों को क्षति पहुंचाती हो? विवाद खड़ा करती हो?

नहीं

12. प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा की योजना क्या उससे सम्बंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है?

हां

13. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले उपायों/क़दमों/प्रयासों के बारे जानकारी में जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते हैं.

समय समय पर कुछ साहित्यकारों एवं संस्कृतिकर्मियों ने लोकगाठा राजा सलहेस और इस लोकनाट्य के पाठों को संकलित करने की कोशिश की है, लेकिन पिछले एक दशक में इस बारे में कोई गंभीर प्रयास नहीं दिखता है जब किसी ने इस महागाथा के संपूर्ण पाठ का संकलन किया हो। इस बारे में जो भी प्रयास हुए हैं उसकी जानकारी रिपोर्ट में दी गयी है।

14. उल्लेखित उपाय/उपायों को पहचान कर चिन्हित करें जिसे वर्तमान में सम्बंधित समुदायों, समूहों, और व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है|

- ✓ **औपचारिक एवं अनौपचारिक तरीक़े से प्रशिक्षण (संचरण)**
- पहचान, दस्तावेजीकरण एवं शोध
- रक्षण एवं संरक्षण
- संवर्धन एवं बढ़ावा
- पुनरुद्धार / पुनर्जीवन

15. स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये? उनका विवरण दें|

संरक्षण हेतु कोई कार्य नहीं किये गये है।

16. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को क्या खतरे हैं? वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और सम्बंधित कारणों का व्योरा दें|

राजा सलहेस नाच एवं गाथा गायन की परंपरा आज कम से कम उत्तर बिहार लुप्तप्राय दिखती है। इस परंपरा के कलाकारों और विशेष विशेषज्ञों की माने तो आज से दस-पंद्रह वर्ष पूर्व मधुबनी और आसपास के इलाकों में बीस से पच्चीस टीमें थीं। मधुबनी शहर में ही पांच से छह टीमें थीं। लेकिन आज मधुबनी शहर में कोई टीम नहीं बची। इसका सबसे बड़ा कारण तो यह है कि यह परंपरा एक कला परंपरा कलाकारों के लिए मुख्य आजीविका के साधन के रूप में कभी भी विकसित नहीं हो पायी। निचली जाति से इसका संबंध होने के कारण साधन संपन्न अगड़ी जातियों ने कभी भी इसे प्रोत्साहन नहीं दिया। सलहेस नाच के ज्यादातर कलाकार आज भी अशिक्षित है, नतीजतन कलाकारों की तरफ से इसे संरक्षित करने के लिए कोई लिखित प्रयास नहीं हुए। इसके संवर्धन की जो भी कोशिश कलाकारों के द्वारा मिलती है, वह मौखिक है।

17. संरक्षण के क्या उपाय अपनाने के सुझाव हैं? (इसमें उन उपायों के पहचान कर उनकी चर्चा करें जिससे के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा मिल सके | ये उपाय ठोस हों जिसे भविष्य की सांस्कृतिक नीति के साथ आत्मसात किया जा सके ताकि के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों का राज्य स्तर पर संरक्षण किया जा सके |

राजा सलहेस नाच परंपरा के संरक्षण हेतु जिन उपायों पर तत्काल अमल करने की जरूरत है, उनमें निम्नलिखित शामिल हैं-

- लोकनाट्य राजा सलहेस का पूर्ण ऑडियो-विजुअल डॉक्यूमेंटेशन
- सलहेस कलाकारों का बिहार में जिलावार डाटाबेस तैयार करना
- कलाकारों को सरकारी नीति और स्कीमों की जानकारी देना
- नयी पीढ़ी में सलहेस नाच के प्रति जागरूरकता पैदा करना
- सरकारी और संगीत नाटक अकादमी के कार्यक्रमों में मौका देना
- देश-विदेश में सलहेस नाटकों को शामिल करना

18. सामुदायिक सहभागिता (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण की योजना में समुदाय, समूह, व्यक्ति की सहभागिता के बारे में लिखें)

राजा सलहेस नाच परंपरा के तत्वों के संरक्षण में समुदाय, समूह और व्यक्ति की सहभागिता कई स्तरों पर महत्वपूर्ण दिखती है जिस इस प्रकार रखा जा सकता है-

समुदाय की जिम्मेदारी- राजा सलहेस नाच की जानकारी आज उनके ही समुदाय में लुप्तप्राय है, लिहाजा उस समुदाय को इस नाच परंपरा के संरक्षण हेतु आगे आना होगा। इसके साथ-साथ संबंधित समुदाय को इसकी भी जिम्मेदारी उठानी होगी कि वह अन्य समुदायों के साथ मिलकर इस नाच परंपरा पर विचार-विमर्श करे। इतना ही नहीं, अन्य लोकनाट्य परंपराओं के संरक्षण हेतु भी समुदायों को एक होकर उसे प्रोत्साहन भी देना होगा, न केवल सामाजिक स्वीकार्यता को लेकर बल्कि उसे प्रोत्साहित करने के अवसरों को भी ध्यान में रखना होगा।

स्थानीय समूह की जिम्मेदारी- संबंधित समुदाय के कुछ शिक्षित लोगों को राजा सलहेस नाच परंपरा के संरक्षण और उस पर नियमित अंतराल पर चर्चा-परिचर्चा की जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। इसके लिए संबंधित समूह को आर्थिक मदद पहुंचाये जाने की जरूरत है ताकि वह न केवल चर्चा-परिचर्चा का आयोजन करे बल्कि इन नाटकों के प्रचार-प्रसार और उसके मंचन हेतु माहौल तैया करे और ग्रामीण नाट्य मंडलियों को भी प्रोत्साहित करे। वह समूह नाटकों के अलग-अलग संस्करणों को भी संरक्षित करे और उसे मुद्रित कराए। वह कलाकारों से संबंधित डाटाबेस भी संरक्षित करे और उसे कलाकारों के राष्ट्रीय डाटाबेस से भी जोड़े।

व्यक्ति की सहभागिता- कलाकर्म करने वाले व्यक्ति इस कला को अपना सकते हैं। लोग इस कलाकर्म को कई मौकों पर प्रोत्साहित कर सकते हैं। मसलन- घर शादी-ब्याह के मौके पर, बच्चों के जन्मदिन के मौके पर या किसी भी अन्य महत्वपूर्ण मौकों पर। यह सबसे महत्वपूर्ण पहल होगी क्योंकि राजा सलहेस लोकनाट्य को निजी स्तर पर प्रोत्साहन की जरूरत है। इसकी सबसे बड़ी वजह तो यह है कि मिथिलांचल की लोकनाट्य परंपरा की जगह वीडियो फिल्म और डीजे के कानफोड़ू संगीत ने ले ली है।

19. सम्बंधित समुदाय के संगठन(नों) या प्रतिनिधि (यों) (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा के तत्त्वों से जुड़ें हर समुदायिक संगठन या प्रतिनिधि या अन्य ग़ैर सरकारी संस्था जैसे की एसोसिएशन, आर्गेनाइजेशन, क्लब, गिल्ड, सलाहकार समिति, स्टीयरिंग समिति आदि)

बिसुनदेव पासवान (लोकगाथा गायक एवं दलनायक) गांव- चिकना, पोस्ट घोघरडीहा जिला- मधुबनी, बिहार फोन- 9572054428	**गंगाराम** लोकगाथा गायक एवं दलनायक गांव- उमगांव, पोस्ट- उमगांव प्रखंड- हरलाखी जिला- मधुबनी पिन- 847225, बिहार

महेंद्र साह कंपनी- मां भवानी नाट्य कला परिषद ग्राम- बेतौनहा, पोस्ट- बेला जयनगर, मधुबनी	**छोटे पासवान** कंपनी- मां भवानी नाट्य कला परिषद ग्राम- कछुआ, पोस्ट- बलुआहा टोला जिला- मधुबनी फोन- 9931218890
डॉ महेंद्र नारायण राम पूसा, समस्तीपुर	**दुखन मुखिया** (नाच कंपनी मालिक) कंपनी- मां सरस्वती नाटक कला परिषद ग्राम- अगरगड़हा पोस्ट- मरौना जिला- सुपौल पिन- 847408, बिहार फोन- 8969716280
बुचरू पासवान इंद्रमाया निवास लक्ष्मी सागर बैंकर्स कॉलोनी मदनपुर, दरभंगा फोन- 995541087	**मोहन पासवान** बाजितपुर नाट्य मंडली ग्राम- मनियारी, पोस्ट- लालशाहपुर थाना- कबीरचक दरभंगा फोन- 8298870553

20. **किसी मौजूदा इन्वेंटरी, डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर (स्थानीय/राज्यकीय/ राष्ट्रीय) की जानकारी जिसका आपको पता हो या आप किसी कार्यालय, एजेंसी, आर्गेनाईजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभल कर रखता हो उसकी जानकारी दें|**

    नहीं

21. **योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों से संबंधित प्रमुख प्रकाशित संदर्भ सूची या दस्तावेज़ (किताब, लेख, ऑडियो-विसुअल सामग्री, लाइब्रेरी, म्यूजियम, प्राइवेट सहृदयों संग्राहकों, कलाकारों/व्यक्तियों के नाम और पते तथा वेबसाइट आदि जो सम्बंधित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के बारे में हों |**

    पुस्तकें-

    मैथिली क्रेटोमैथी एंड वोकुबलरी – सर जॉर्ज ए. ग्रियर्सन
    सलहेस लोकगाथा – डॉ. महेंद्र नारायण राम
    मैथिली लोकनाट्य का विवेचन – डॉ विशेश्वर मिश्र
    राजा सलहेस: साहित्य और संस्कृति – डॉ प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन
    राजा सलहेस – डॉ. अविनाश चंद्र मिश्र
    मैथिली लोकनाट्य: विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण – महेंद्र मलंगिया
    सलहेस भगत (अंगिका) - डॉ. नरेश पांडेय चकोर
    लोकनायक राजा सलहेस - राम भरोस कापड़ी भ्रमर

अंशुमाला

216, आशा पुष्प विहार
सेक्टर-14, कौशांबी
गाजियाबाद-201010
यूपी
संपर्क- 9818017999

लोकनाट्य राजा सलहेस

रिपोर्ट: अंशुमाला

नेपाल और भारत की साझा लोकसंस्कृति का प्रतीक है लोकगाथा राजा सलहेस, जिसे स्थानीय बोली में सलहेस नाच भी कहते हैं। बिहार के संपूर्ण मिथिलांचल और उससे सटे नेपाल में इसकी लोकप्रियता इतनी है कि आप नाच खेलना शुरू कीजिए, लोक स्वत: आपसे जुड़ जाएगा। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संदेशों से लबरेज यह नाच अब विलुप्ति के कगार पर है और विपन्नता से विवश इसके कलाकार इस नाच की थाती अगली पीढ़ी को देने से गुरेज कर रहे हैं। क्या है सलहेस नाच, क्या हैं इसके नष्ट होने के कारण और क्या है इससे जुड़े कलाकारों की दशा और दिशा, इसी पर प्रथम रिपोर्ट:-

प्रोजेक्ट: सलहेस नाच (लोकनाट्य) एवं संबद्ध कलाकारों का ऑडियो-वीजुअल डाटा संकलन

कार्य क्षेत्र: बिहार में मधुबनी एवं उसके आसपास का क्षेत्र

वर्ष: 2015-16

सेफगार्डिंग द इनटैंजिबल कल्चरल हेरिटेज एंड डाइवर्स कल्चरल ट्रेडिशन्स ऑफ इंडिया, मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के तहत।

संक्षिप्त भूमिका

मधुबनी समेत वृहद मिथिलांचल और संभवत: बिहार का सबसे लोकप्रिय लोकनाट्य है राजा सलहेस नाच, लेकिन दुर्भाग्य से अब इस विलक्षण लोकनाट्य परंपरा के कलाकार विरले ही मिलते हैं। मधुबनी और उसके आसपास के इलाकों में सलहेस लोकनाट्य परंपरा की नाच पार्टियों की खोज में मधुबनी की अपनी कई यात्राओं के दौरान यह बात सामने आई कि इस परंपरा के नाच मंडलियों की संख्या अब गिनती की रह गई है।

मधुबनी शहर में एक भी नाच पार्टी नहीं है। हालांकि मधुबनी के सुदूर देहात में कुछ नाच पार्टियों की जानकारी मिली है, बल्कि यह कहना चाहिए कि कुछ लोक कलाकारों की जानकारी मिली है। जयनगर क्षेत्र के बेतौनहा, हरलाखी क्षेत्र के करुणा गांव, उमगांव, बसोपट्टी, मैबी, चिकना, अगरगड़हा और कसहा जैसे गांवों में सलहेस कलाकारों की उपस्थिति का पता चला है।

दुर्भाग्य से अभी तक उनमें से कुछ ही कलाकारों से मुलाकात हो पाई और उनसे बातचीत में यह तथ्य भी सामने आया है कि पूर्ण रूप से खेतिहर मजदूर या मजदूर बन चुके वे लोक कलाकार आजीविका की तलाश में ज्यादातर अपनी जगहों से उखड़ चुके हैं और अब ज्यादातर कलाकार दूसरे राज्यों में मजदूरी कर रहे हैं। उनके गांवों में उनकी मौजूदगी ज्यादातर दुर्गापूजा, दिवाली और छठ पूजा के अवसर पर मिलती है, जब वे अपने गांव लौटते हैं और अपनी आजीविका में कुछ अतिरिक्त आय जोड़ने के लिए मंच पर लौटते हैं।

यह तथ्य भी सामने आया है कि इन टीमों में एकमात्र बेतौनहा की टीम ऐसी है, जो सिर्फ और सिर्फ सलहेस लोकनाट्य का मंचन करती है। जो लोकनाट्य परंपरा लोक में सर्वाधिक लोकप्रिय हो और सुदूर देहातों में भी जहां इसके दर्शक नहीं, प्रेक्षक मौजूद हों, वह नाट्य परंपरा किन कारणों से विलुप्त होती जा रही है, इस पर विस्तृत शोध करने की जरूरत है।

सलहेस कलाकारों से संबंधित जानकारी जुटाने और उनके डॉक्युमेंटेशन हेतु इस नाट्य परंपरा के विशेषज्ञों और उसके जानकारों से बातचीत की गई है, जिसमें कई महत्वपूर्ण जानकारियां सामने आई हैं, मसलन आखिर किन वजहों से ये कलाकार विलुप्त होते जा रहे हैं। आखिर क्यों इस नाट्य परंपरा को सहेजने-संजोने वाले कलाकार उसे अपनी अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करने से गुरेज कर रहे हैं, आदि।

अपनी पहली रिपोर्ट में मैंने सलहेस से जुड़ी मिथिलांचल की संस्कृति, लोकगाथा राजा सलहेस और उसके कथानकों के विस्तार, जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन द्वारा टंकित पाठ, सलहेस लोकनाट्य के पात्रों से परिचय, लोकगाथा या लोकनाट्य में वर्णित महत्वपूर्ण स्थलों, परंपरागत नाच परंपरा में सलहेस लोकनाट्य और आधुनिक सलहेस नाटक का मंचन और कलाकारों की भौगोलिक स्थिति पर जुटाई जानकारी को शामिल किया है। रिपोर्ट के अंत में सलहेस लोकनाट्य परंपरा से संबंधित विशेषज्ञों और कुछ कलाकारों की भी जानकारी सामने रखी गई है। इसमें कलाकारों की सूची का फोटोस्टेट अलग से संलग्न किया गया है। यह सूची मधुबनी और दरभंगा में राजा सलहेस लोकगाथा और लोकनाट्य विशेषज्ञों और जानकारी प्राप्त लोककलाकारों से बातचीत के आधार पर तैयार की गयी है जिनका अभी पुष्टि किया जाना बाकी है। कलाकारों एवं उनके मंचन से संबंधित संभावित ऑडियो-

वीजुअल डॉक्यूमेंटेशन, कलाकारों या उनके दलनायकों से बातचीत एवं उनकी वर्तमान सामाजिक स्थिति पर विस्तृत जानकारी फाइनल रिपोर्ट में दे पाना संभव होगा।

विषय सूची: राजा सलहेस

1. मिथिलांचल और सलहेस संस्कृति
2. लोकगाथा राजा सलहेस
3. मुख्य कथा का विस्तार

I. डोला प्रथा का अंत
II. पचला धोबिन से युद्ध
4. ज.अ. ग्रयर्सन द्वारा टंकित पाठ
5. लोकनाट्य राजा सलहेस: पात्र परिचय
6. राजा सलहेस से जुड़े महत्वपूर्ण स्थल
7. राजा सलहेस की प्रासंगिकता
8. गाथा आधारित नाच एवं आधुनिक मंचन
i. परंपरागत सलहेस नाच
ii. लोकनाट्य राजा सलहेस
9. सलहेस कलाकारों की भौगोलिक स्थिति
10. कलाकारों की अपुष्ट सूची

1. मिथिलांचल और सलहेस-संस्कृति

भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों की तरह बिहार में लोकगाथाओं की लंबी परंपरा रही है। यह परंपरा बहुधा श्रुति माध्यम से एक लोक कलाकार से दूसरे लोक कलाकार तक सुरक्षित और संरक्षित होती आती है और वही अगली पीढ़ी तक उसके वाहक रहे हैं। श्रुति परंपरा में होने के कारण अपनी सुविधाओं के हिसाब से लोकगाथाओं में कुछ जोड़ने और कुछ घटाने की गुंजाइश रही है, लेकिन उसकी मूल भावनाओं को बिना आहत किए हुए। ये लोकगाथाएं लोक मनोरंजन का माध्यम भी होती हैं और लोक समाज को गति देने हेतु उत्प्रेरक का काम भी करती हैं।

बिहार की लोक संस्कृति में कई लोक गाथाएं सुनी जा सकती हैं और अलग-अलग मौकों पर उनका मंचन भी देखा जा सकता है। इनमें राजा सलहेस दीना भद्री, कारिख पंजियार, दुलरा दयाल, लोरिक मनियार, गनीनाथ-गोविंद, श्याम सिंह, बेनी राम आदि प्रमुख हैं। इनमें हर लोकगाथा किसी न किसी जाति विशेष द्वारा पोषित और संरक्षित हुई है। लेकिन, इन लोकगाथाओं में एक मात्र राजा सलहेस ने पूरे बिहार में और खासतौर पर वृहद मिथिलांचल (नेपाल का हिस्सा भी शामिल) में एक पूरी की पूरी सलहेस संस्कृति विकसित कर दी।

राजा सलहेस मिथिलांचल में सलहेस संस्कृति की व्यापकता इतनी है कि दुसाध जाति से संबद्ध होने के बावजूद इस लोकगाथा के न केवल जातीय बंधन लांघे, बल्कि उससे भी आगे

बढ़ते हुए तमाम निचली जातियों समेत अगड़ी जातियों में भी समान रूप से लोकप्रिय हुए। सलहेस संस्कृति की स्वीकार्यता इतनी बढ़ी कि आज संपूर्ण मिथिलांचल समेत पूरे बिहार में राजा सलहेस के मंदिरनुमा स्थायी गहवर मिल जाते हैं, जहां उनकी पूजा अर्चना की जाती है।

मिथिलांचल की लोक संस्कृति राजा सलहेस किस तरह से आच्छादित हैं, इसका पता इसी से चलता है कि मिथिलांचल में न केवल इनकी लोकगाथा का गायन अतिलोकप्रिय है, बल्कि नाटकों जिसे स्थानीय बोली में **'नाच'** कहा जाता है, चित्रकला, मूर्तिकला, संस्थापन कला और साहित्य में यह समान रूप से विद्यमान है।

मिथिलांचल की लोकसंस्कृति में राजा सलहेस निम्न रूपों में विद्यमान हैं-

I. गाथा गायन
II. नाच या नाटक
III. चित्रकला
IV. मूर्तिकला एवं
V. साहित्य।

I. गाथा गायन

मिथिलांचल में लोकगाथा राजा सलहेस के एकल और सामूहिक दोनों ही तरह के गायन की परंपरा मिलती है। एक गायन आमतौर पर ओरनी वाद्ययंत्र की धुन पर किया जाता था, हालांकि अब यह वाद्ययंत्र इस क्षेत्र से लुप्त हो चुका है। सामूहिक गायन की परंपरा झाल, किरताल और ढोलक पर थी, जिसमें समय के साथ-साथ हारमोनियम और क्लारनेट भी शामिल हुआ।

राजा सलहेस लोकगाथा और उनसे जुड़े भक्ति गीतों का गायन डोम और दुसाध समाज में मांगलिक अनुष्ठानों के अवसर पर होता है। गायन शुरू करने से पहले दिशाओं और दिकपालों का सुमिरन किया जाता है और तत्पश्चात गायन शुरू होता है। गायन की परंपरा में सलहेस से व्यक्तित्व से जुड़े दो महत्वपूर्ण पहलुओं, उनकी वीरता और तरेंगना की राजकुमारी दौना मालिन और पकड़िया गढ़ की राजकुमारी चंद्रावती के प्रेम प्रसंगों की प्रमुखता रहती है।

II. नाच या नाटक

संपूर्ण मिथिलांचल में जितनी लोकप्रिय परंपरा राजा सलहेस के गाथा गायन की है, उतना ही लोकप्रिय सलहेस लोकनाट्य भी है। स्थानीय बोलियों में इसे सलहेस नाच भी कहते हैं और सुदूर देहातों में इसे चौकीतोड़ नाच भी कहा जाता है। मधुबनी स्थित लोक-कलाकार जटाधर पासवान, जिनकी संस्था जमघट ने करीब डेढ़ दशक मधुबनी शहर में राजा सलहेस लोकनाट्य का सफल मंचन किया था, कहते हैं कि चूंकि गांव देहातों में कलाकारों के लिए मंचन हेतु मंच की व्यवस्था नहीं होती थी, तो

स्थानीय कलाकार लोगों के घरों से चौकी मांग कर अपने लिए मंच तैयार करते थे। इस लोकनाट्य में नृत्य संगीत की प्रधानता है और आमतौर पर पुरुष कलाकार ही स्त्रियों का पात्र निभाते थे। इसी वजह से इसे चौकीतोड़ नाच भी कहा जाता था। हालांकि लोगों के बीच अब इसके लिए नाच शब्द ही सर्वमान्य है।

III. चित्रकला

मिथिला चित्रकला की हरिजन शैली में राजा सलहेस के चित्रण को प्रमुखता से देखा जा सकता है। मधुबनी जिला के कई इलाकों में इसके चित्रण की परंपरा है, लेकिन लहरियागंज, जितवारपुर और सिमरी में इसे प्रमुखता से देखा जा सकता है। यहां हरिजन शैली को गोदना पेंटिंग भी कहा जाता है, जिसे शुरू करने का श्रेय जितवारपुर निवासी स्वर्गीय चानो देवी को जाता है।

चित्रकला में राजा सलहेस के साथ उनके भाई मोतीराम, बुधेसर, उनका भगना करिकन्हा, उनकी मालिन प्रेमिकाएं दौना मालिन, रेशमा, कुसमा और राजकुमारी चंद्रावती, उनके हाथी भौरानंद, सलहेस का गहवर, उनके अहिराणव सुग्गा और उनके अनुचर आदि का चित्रण होता है। विषय के तौर पर सलहेस की फुलवारी, कमल दह और पतारि पोखरि में स्नान, चूहड़मल और अन्न समकालीन योद्धाओं से मल्ल युद्द को प्रमुखता से दर्शाया जाता है।

IV. मूर्तिकला

जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने 1881 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'ऐन इंट्रोडक्शन टू द मैथिली लिटरेचर ऑफ नॉर्थ बिहार, क्रिस्टोमैथी एंड वोकैबुलरी' में तिरहुत में राजा सलहेस से जुड़ी कई महत्वपूर्ण और आरंभिक जानकारियां जुटाई हैं। उनमें राजा सलहेस से जुड़ी मूर्तिकला की भी आरंभिक जानकारियां मिलती हैं, जिसे हम आधुनिक संदर्भ में मूर्तिकला के साथ-साथ संस्थापन कला के रूप में भी देख सकते हैं।

ग्रियर्सन ने राजा सलहेस के गहवरों या मंदिरों के बारे में नहीं लिखा है, अपितु उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा कि मिथिला में आमतौर पर गांव के बाहर पीपल के वृक्ष के नीचे मिट्टी के ऊंचे डीह पर सलहेस थान (स्थान) बना होता था। इसी डीह पर राजा सलहेस और उनकी लोकगाथा से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण किरदारों की मिट्टी की प्रतिमाएं रखी जाती थी, जहां दुसाध समाज के लोग उनकी आराधना करते थे।

मधुबनी, दरभंगा, समस्तीपुर, सुपौल, सहरसा समेत कई अन्य जिलों के सुदूर देहातों में सलहेस थान (स्थान) आज उस रूप में देखे जा सकते हैं, जिसकी चर्चा ग्रियर्सन ने की है। लेकिन, शहर से सटे इलाकों में या उन क्षेत्रों मे जहां शहरीकरण का प्रभाव पहुंच चुका है, सलहेस थान (स्थान) पक्के गहवरों में बदल गए हैं, जहां सलहेस और उनके परिवार के अन्य सदस्यों, दौना मालिन, शेर या बाघ, पहरेदारों और चूहड़मल की मिट्टी की प्रतिमाएं देखने को मिलती हैं।

V. साहित्य

जॉर्ज अ. ग्रियर्सन के द्वारा संकलित लोकगाथा राजा सलहेस को अगर साहित्यकारों, विद्वानों और संस्कृतिकर्मियों द्वारा सलहेस पर रचित साहित्य का मूल केंद्र कहा जाए, तो यह गलत नहीं होगा। ग्रियर्सन ने एन इंट्रोडक्शन टू द मैथिली लिटरेचर ऑफ नॉर्थ बिहार, क्रिस्टोमैथी एंड वोकैबुलरी में राजा सलहेस का प्रथम पाठ संकलित किया था, जो इस लोकगाथा की प्रस्तुति का प्रथम मुद्रित स्वरूप है। इसे उन्होंने एक डोम गाथा गायक से सुनकर उनसे लिखा था।

ग्रियर्सन के बाद डॉ. पूर्णानंद दास ने बिहार के पंद्रह लोकगाथाओं का संकलन किया, जिसमें से एक लोकगाथा राजा सलहेस का पाठ भी है। 1962 के इस शोध प्रबंध में सलहेस का पाठ उन्होंने लोकगायक फूलचंद दास से सुनकर लिखा था। डॉ. पूर्णानंद दास के बाद 1981 में डॉ. मोतीलाल यादव ने एक दुसाधेतर गाथा गायक से राजा सलहेस के पाठ का संकलन किया। तत्पश्चात, डॉ. महेंद्र नारायण राम और डॉ. फूलो पासवान ने सलहेस लोकगाथा के नाम से पुस्तक लिखी। अंगिका में भी राजा सलहेस का पाठ लिखा गया, जिसे डॉ. नरेश पांडेय चकोर ने सलहेस भगत के नाम से संकलित किया था।

सलहेस लोकगाथा पर आधारित सबसे प्रमुख रचना 1973 में प्रकाशित डॉ. ब्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म' का राजा सलहेस है। डॉ. अविनाश चंद्र मिश्र इस उपन्यास को अत्यधिक महत्व देते हुए कहते हैं कि इस उपन्यास ने राजा सलहेस के इतिहास, उनके व्यक्तित्व, उनके संघर्षों को जिस अतिकल्पनाशीलता से तार्किक बनाकर परोसा, वह न सिर्फ पाठकों को चमत्कारी और आह्लादकारी लगा, बल्कि उसने कई स्तरों पर सलहेस की गाथा कथा में घटाव तो कम ही, जोड़-जाड़ के अवसर अधिक दिए। इसमें जो कमी रह गई वह 1999 में प्रकाशित उनके महाकाव्य अनंग कुसमा से पूरी होने लगी। इसमें सलहेस लोकगाथा की मालिन प्रेमिकाओं-बहनों में से दौना और फुलवंती को पीछे ढकेल कुसुमा को सलहेस की मुख्य जोड़ीदार प्रेमिका के रूप में प्रतिष्ठा दिलाई।

1978 में राजा सलहेस से जुड़ा 'जय राजा सलहेस' नाम से एक और महाकाव्य प्रकाशित होता है, जिसके रचनाकार हैं मतिनाथ मिश्र। लेखक स्वयं स्वीकार करते हैं कि यह महाकाव्य मणिपद्म रचित महाकाव्य 'राजा सलहेस' पर आधारित है। इनके अलावा बिहार और मैथिली के कई महत्वपूर्ण साहित्यकारों ने कई प्रमुख रचनाएं कीं। राजा सलहेस पर दो पुस्तक डॉ. प्रफुल्ल कुमार मौन एवं डॉ. राम प्रताप नीरज द्वारा संपादित पुस्तक 'राजा सलहेस: साहित्य और संस्कृति' तथा नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित और राम भरोस कापड़ी भ्रमर द्वारा संपादित पुस्तक 'लोकनायक राजा सलहेस' का प्रथम खंड महत्वपूर्ण है। इन दोनों पुस्तकों में कई अलग-अलग लेखकों के कई शोधपरक लेख हैं।

2. लोकगाथा राजा सलहेस

मिथिलांचल समेत संपूर्ण बिहार के लोक-साहित्य, लोक-गाथा और लोक-नाट्य परंपरा में अगर किसी एक नायक किसी-न-किसी रूप में व्याप्त है, तो वह हैं राजा सलहेस। राजा सलहेस की लोकगाथा जितनी लोकप्रिय उत्तर बिहार में है, उतनी ही लोकप्रिय वह दक्षिण बिहार में भी है। चूंकि राजा सलहेस की लोक गाथा लोक परंपरा का हिस्सा रही है, इसलिए अलग-अलग क्षेत्र में थोड़ा-बहुत फेरबदल के साथ इसके कई पाठ मिल जाते हैं, जो कहीं वृहद हैं, तो कहीं संक्षिप्त।

लोकगाथा के वृहद पाठ को लिपिबद्ध करने की आज भी पूरी गुंजाइश है। राजा सलहेस से जुड़े दो प्रमुख गायकों, बिहार के मधुबनी जिले के उमगांम में रहने वाले गंगाराम और चिकना गांव में रहने वाले बिसुनदेव पासवान के मुताबिक, आज वृहद गाथा का पाठ करने वाले लोग न के बराबर हैं। इसकी पुष्टि इस लोकगाथा के जानकार भी करते हैं। उनके मुताबिक, इसकी एक बड़ी वजह यह भी है कि यह सिर्फ लोक गाथा नहीं है, बल्कि इसे लोक-महागाथा कह सकते हैं।

सलहेस महागाथा के सात खंड हैं, जिसका गायन सात रातों में पूर्ण होता है। यह गायन एक दो घंटे का नहीं होता है, बल्कि सातों दिन करीब छह से सात घंटे तक चलता है। इतना धैर्य न तो सुनने वालों के पास होता है और न ही लोकगायकों में। यही वजह है कि अब संपूर्ण पाठ की उपलब्धता आसान नहीं है, खासकर लोकगाथा की चारित्रिक विशेषताओं के आलोक में, जो समय के साथ परिवर्तनशील होता है। इस लोकगाथा को यहां संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

नेपाल के सिरहा जिला स्थित राज महिसौथा में राजा सलहेस का जन्म होता है। गाथा में सलहेस कई जगहों पर खुद को दुसाध जाति का बताते हैं। सलहेस अपने समय के नामी

पहलवान और पराक्रमी राजा थे। सलहेस का विवाह वराटपुर की राजकुमारी सत्यवती से तय होता है। वराटपुर का राजकुमार सत्यवती का विवाह सलहेस के साथ तय होने से नाखुश रहता है, क्योंकि वह सत्यवती का विवाह अपने मित्र भुटानेश्वर से करना चाहता था।

महिसौथा के पास के ही राज्य तरेंगना के राजा महेश्वर भंडारी की चार बेटियां होती हैं, रेशमा, कुशमा, दौना और फूलवंती। इनमें फूलवंती सबसे बड़ी है। तंत्र विद्दा में पारंगत ये चारों मालिन राजकुमारियां सलहेस पर आसक्त हैं। सलहेस का विवाह सत्यवती से नहीं हो, इसके लिए ये वराटपुर जाकर सलहेस को सुआ बनाकर अपने पास रख लेती हैं, लेकिन सलहेस अपने भाई मोतीराम की मदद से मालिन राजकुमारियों की चंगुल से मुक्त होते हैं और उनका विवाह सत्यवती से हर्षोउल्लास के साथ होता है। तत्पश्चात् सलहेस सत्यवती के साथ राज महिसौथा लौटते हैं और आनंदपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करते हैं।

गाथा के मुताबिक, राजा सलहेस माता भगवती के अनन्य भक्त हैं और गाथा प्रकरण में उन्हें भगवती के साथ संवाद करते हुए बताया गया है। सलहेस प्रकृति प्रेमी हैं और उनके पास एक सुंदर फुलवारी है। एक दिन माता भगवती सलहेस को स्वप्न देती हैं और स्वप्न में कहती हैं कि उन्हें पकड़िया के राजा कुलेश्वर की फुलवाड़ी देखनी चाहिए, जो उनकी फुलवाड़ी से ज्यादा रमणीय है। पकड़िया के राजा कुलेश्वर की बेटी चंद्रावती जिसने बारह वर्षों से सलहेस को अपने पति के रूप में स्वीकार किया हुआ था, माता भगवती उन्हें भी स्वप्न देती है। भगवती चंद्रावती से कहती हैं कि तुम जिस सलहेस का इंतजार बारह वर्षों से कर रही हो, वह कल तुम्हारी फुलवाड़ी में आने वाला है।

चंद्रावती सहलेस से फुलवाड़ी में मिलती है और कहती है, 'वह बारह वर्षों से उनसे विवाह का स्वप्न पाले हुए है, लिहाजा सलहेस उन्हें पत्नी के रूप में स्वीकार करें।' तब सलहेस यह कहकर चंद्रावती का प्रस्ताव अस्वीकर कर देते हैं कि राजकुमार सत्यवती से उनकी शादी हो चुकी है। सलहेस के इनकार से नाराज चंद्रावती अपने पिता कुलेश्वर से शिकायत करती है कि सलहेस ने उनका शीलहरण करना चाहा। इस बात से कुलेश्वर आगबबूला होकर सलहेस को पकड़कर जेल में डाल देते हैं। जेल में सलहेस को कई यातनाएं दी जाती हैं, जिससे द्रवित होकर चंद्रावती अपने पिता से कहती है कि वह सलहेस को उनके महल की पहरेदारी में लगा दें। कुलेश्वर अपनी बेटी की बात मानकर सलहेस को चंद्रावती के महल की पहरेदारी का जिम्मा देते हैं।

राजकुमारी चंद्रावती के महल की पहरेदारी का जिम्मा तब मोकामागढ़ के राजा चूहड़मल के पास था। कुलेश्वर द्वारा उनकी जगह सलहेस को पहरेदारी का जिम्मा दिए जाने से नाराज चूहड़मल कुलेश्वर से क्रुद्ध हो जाता है और बदला लेने की ठानता है। चूहड़मल माता गंगा का परम भक्त है। वह माता गंगा से मदद की गुहार लगाता है और माता गंगा को चढ़ावा देने का संकल्प देकर वह उनसे चोरी की विद्या प्राप्त करता है। माता गंगा के आशीर्वाद से वह मोकामागढ़ से पकड़िया में राजकुमार चंद्रावती के शयन कक्ष तक सुरंग खोदता है और चंद्रावती के वस्त्राभूषण चुरा लेता है। इस चोरी का आरोप राजा सलहेस पर लगता है। चोरी सलहेस की पहरेदारी में होती है, राजा कुलेश्वर उन्हें दोषी मानकर दोबारा जेल में डाल देते हैं।

सलहेस की इस स्थिति की जानकारी माता भगवती रानी सत्यवती और मालिन राजकुमारी फूलवंती को देती है। फूलवंती रानी सत्यवती की इजाजत से सलहेस को मुक्त कराने के लिए पकड़िया राज कुलेश्वर के दरबार में पहुंचती है। चूंकि फूलवंती तंत्र विद्या में पारंगत है और

योगिनी है, वह अपने योगबल से यह जान गई है कि चोरी चूहड़मल ने की है। वह कुलेश्वर से कहती है कि सलहेस निर्दोष हैं और यह वह सात दिन में साबित कर देगी, लेकिन इसके लिए उसे सलहेस की मदद चाहिए। फूलवंती की जमानत पर कुलेश्वर सलहेस को उसके साथ जाने की इजाजत दे देते हैं।

सलहेस और फूलवंती नट और नटिन के वेश में मोकामागढ़ पहुंचते हैं। नटिन का वेश धरी फूलवंती वहां गोदना गोदने का काम करती है। वह चूहड़मल के महल में भी पहुंचती है और चूहड़मल की पत्नी से गोदना गोदने के एवज में चंद्रावती के शयनकक्ष से चुराए गए आभूषण को उपहार स्वरूप मांग लेती है। इसके बाद चूहड़मल और नटिन की मुलाकत होती है। चूहड़मल नटिन की सुंदरता पर मुग्ध हो जाता है और नटिन इसका लाभ उठाते हुए चूहड़मल को मदिरापान से मदहोश कर देती है। तब सलहेस चूहड़मल की मुश्कें बांध देते हैं और अपने मनचितरा भैंसा पर लादकर उसे पकड़िया ले आते हैं, जहां नटिन बनी फूलवंती चोरी के आभूषण पेश करती है और कहती है कि चोर सलहेस नहीं, चूहड़मल है।

सलहेस की निर्दोषता साबित होने के बाद कुलेश्वर उन्हें मुक्त कर देते हैं और सलहेस को राज महिसौथा लौटने की अनुमति देते हैं। जब सलहेस फूलवंती के साथ राज महिसौथा के कुलेश्वर के महल से निकलने लगते हैं, तब चंद्रावती एक बार फिर उनके समक्ष उपस्थित होती है। वह सलहेस से कहती है कि बारह वर्षों तक उसने उन्हें पति मानकर तपस्या की है, इसलिए वह उसे पत्नी के रूप में अंगीकार करें। सलहेस एक बार फिर चंद्रावती का प्रस्ताव अस्वीकार कर देते हैं और फूलवंती के साथ राज महिसौथा के लिए निकल पड़ते हैं। चंद्रावती अश्रुपूर्ण नेत्रों से सलहेस को जाते हुए देखते रह जाती है। ।।-।।

3. लोकगाथा का विस्तार

संपूर्ण बिहार में लोकगाथा राजा सलहेस के कई पाठ मिलते हैं। लोकश्रुति और जनश्रुति परंपरा में इस लोकगाथा की मौजूदगी की वजह से अलग-अलग इलाकों में अलग-अलग पाठों का मिलना स्वभाविक भी है। कई जगहों पर तो ये पाठ मुख्य लोकगाथा को विस्तार भी देते दिखते हैं और इनमें समाजिक कुरीतियों के खिलाफ सलहेस के संघर्ष की दास्तान भी मिलती है। इन पाठों के अपने मायने हैं, जिनमें गूढ़ संदेश भी छिपे हैं और जिन्हें अनावरित करने की जरूरत है।

I. डोला प्रथा का अंत

सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ राजा सलहेस का संघर्ष कई स्थानों पर मिलता है। उनमें से एक है डोला प्रथा के खिलाफ राजा सलहेस का संघर्ष। इसकी कथा मध्य बिहार के बेगूसराय जिले में प्रचलित है, जो इस तरह से है-

राजा सलहेस का घर पकड़ी राज (बेगूसराय का पोखड़िया इलाका) में था। इनकी मां का नाम अंबा और भाई का नाम मोतीराम था। इनकी पत्नी सामर थी। सलहेस का ससुराल उत्तर बिहार दरभंगा शहर और नेपाल के मध्य मौजीपुर इलाके में था। सलहेस की शादी बालपन में हो गई थी। जब वह युवा हुए तब उनकी पत्नी सामर की रुकसदी हुई थी।

कहा जाता है कि जिस समय सलहेस सामर का रुकसदी कराने के लिए मौजीपुर गए थे, तब मौजीपुर ही नहीं, पूरे बिहार में डोला प्रथा प्रचलित थी। डोला एक ऐसी कुप्रथा थी, जिसमें लड़की को रुकसदी से पहले राजा के अंत:पुर में एक रात निवास करना होता था और उसके अगले दिन उसे अपने ससुराल जाने की इजाजत होती थी। अर्थात् दुल्हन को अपनी पहली रात अपने पति के साथ नहीं, राजा के साथ गुजारनी होती थी। राजा उसका शीलभंग करता था और उसके बाद वह अपने पति के घर विदा होती थी। यह कुप्रथा लंबे समय से चली आ रही थी और इस कुप्रथा का विरोध करने का साहस किसी में भी नहीं था।

सलहेस जब सामर का रुकसदी कराने गए तब मौजीपुर का राजा बहुत ही क्रूर था। रुकसदी के समय सामर की मां यह सोचकर कि राजा सामर का डोला मांगेगा, जोर-जोर से रोनी लगी। राजा डोला जरूर मांगेगा, यह वह जानती थी, क्योंकि उस राजा ने उसके पिता से उसका डोला मांगा था। जो उसके साथ हुआ, वह सामर के साथ नहीं हो, इसके लिए उसने रोते हुए सारी बात सलहेस को बताई।

सलहेस इस कुप्रथा के बारे में सुनकर दुखी हो गए। उन्होंने फैसला किया का सामर का डोला राजा के घर नहीं जाएगा। सलहेस राजा के हजाम, जिसका नाम हजमा खरना था, उससे राजा को एक संदेश भिजवाते हैं कि वह अपनी पत्नी सामर का रुकसदी कराने मौजीपुर आएं हैं और वह सामर का डोला राजा को नहीं देंगे। अगर उसमें हिम्मत है, तो वह लड़कर उनसे डोला लें। सलहेस का यह पत्र पढ़कर राजा आगबबूला हो जाता है।

राजा अपने सिपाहियों के साथ पूरे इलाके को घेर लेता है। इससे गांव में भगदड़ मच जाती है, लेकिन सलहेस तनिक भी विचलित नहीं होते हैं। वह अपनी आराध्या मां भगवती का ध्यान करते हैं और उनकी पूजा-अर्चना के बाद राजा से युद्ध करने चले जाते हैं। राजा और सलहेस के बीच भयंकर युद्ध होता है, जिसमें सलहेस विजयी होते हैं और राजा मारा जाता है। राजा की मृत्यु के बाद सलहेस मौजीपुर के राजा बनते हैं और सबसे पहले डोला की कुप्रथा समाप्त करने की घोषणा करते हैं। ।।-।।

II. पचला धोबिन से युद्ध

उत्तर एवं मध्य बिहार के कई जिलों में, जिसमें मधुबनी, सहरसा, सुपौल, दरभंगा, बेगूसराय आदि शामिल हैं, वहां राजा सलहेस से जुड़ी हुए एक और कथा काफी प्रचलित है और इस कथा के प्रसंग मुख्य गाथा में मिलते हैं। यह प्रसंग है पचला धोबिन का, जो मुख्य गाथा में संभवत: मालिन राजकुमारियों के रूप में हैं। पचला धोबिन मालिन राजकुमारियों की तरह है जादू और तंत्र मंत्र में पारंगत थी। पचला धोबिन की कथा के मुताबिक -

नेपाल स्थित मोरंग शहर में एक अत्यंत खूबसूरत युवती थी, जिसका नाम था पचला धोबिन। वह जितनी खूबसूरत थी, उससे भी ज्यादा बड़ी जादूगरनी थी। कहा जाता है कि वह अपने समय के पांच सौ जादूगरनियों की सरदार थी। वह अक्सर वीर पुरुषों की ताक में रहती थी और जब भी कोई वीर पुरुष उसे मिलता, वह उसके साथ शादी कर लेती और उसे अपना गुलाम बना लेती थी।

सलहेस किस प्रकार मौजीपुर के राजा को युद्ध में परास्त किए और फिर मौजीपुर के राजा बने, इसका वर्णन पचला धोबिन कई लोगों से सुन चुकी थी। वह यह भी सुन चुकी थी कि किस प्रकार सलहेस ने डोला प्रथा को बंद कराया और लोक प्रसिद्धि पाई थी। इससे उसके मन में सलहेस के प्रति आसक्ति उत्पन्न हुई और वह किसी भी कीमत पर सलहेस को अपना बनाने की ताक में लग गई।

पचला धोबिन के पास हिरामन नाम का एक सुग्गा था, जिससे वह संदेश भेजने और प्राप्त करने का काम करती थी। वह एक पत्र लिखकर हिरामन सुग्गा को देती है कि वह पत्र सलहेस तक पहुंचा दे। हिरामन सुग्गा पत्र को लेकर सलहेस के घर तक पहुंचता है और प्रात: काल जब सलहेस की पत्नी सामर आंगन बुहार रही होती है तब हिरामन उस पत्र को आंगन में गिरा देता है। सामर उस पत्र को अपने शयनकक्ष में पलंग पर रख देती है। बाद में जब सलहेस उस पत्र को पढ़ते हैं, तो विचलित हो जाते हैं।

पचला दोबिन ने उस पत्र में लिखा था कि अगर वह अपने बाप के बेटे हैं, तो मोरंग राज में आएं और अगर नहीं हैं, तो नहीं आएं। यह सलहेस को खुली चुनौती थी। सलहेस के परिवार के लोगों ने जब इस पत्र के बारे में जाना, तब वे सभी व्याकुल हो गए, क्योंकि उन्होंने मोरंग राज और पचला धोबिन के बारे में सुन रखा था। किसी तरह उन्हें जानकारी मिली कि पचला धोबिन सलहेस को जादू के बल पर सुग्गा बनाकर अपने पास रख लेना चाहती है। घर के सभी लोगों के मना करने के बावजूद सलहेस मोरंगराज जाने के लिए तैयार होते हैं। सलहेस किसी की भी बात नहीं मानते हुए अपने हाथी भौरानंद पर सवार होकर मोरंगराज के लिए रवाना होते हैं।

पचला धोबिन जानती थी कि सलहेस वीर पुरुष हैं और अगर उन्हें चुनौती दी जाए, तो वह उस चुनौती को अस्वीकार नहीं करेंगे और मोरंग जरूर आएंगे, इसलिए वह सलहेस के मोरंग आने का इंतजार कर रही थी। जब सलहेस मोरंग की सीमा पर पहुंचते हैं, तो उनके हाथी भौरानंद के गले में बंधी घंटी की आवाज सुनकर पचला धोबिन जान जाती है कि सलहेस उनकी सीमा पर पहुंच गए हैं। वह भी मोरंग की सीमा पर पहुंचती है और अपने जादू से वहां एक सुंदर नगर का निर्माण कर गांजा और अन्य कई सामान बेचने लगती है। सलहेस पचला के पास बैठकर गांजा पीते हैं। जादू से बने गांजे के प्रभाव में सलहेस बेहोश हो जाते हैं और पचला धोबिन उन्हें जादू से सुग्गा बना देती है। वह भौरानंद हाथी को पास के ही एक पीपर के गाछ से बांधकर सुग्गे रूपी सलहेस को लेकर अपने साथ चली जाती है।

पचला धोबिन अपने महल में सलहेस को रोज रात आदमी बनाकर उसके साथ भोग-विलास करती थी और सुबह होती ही उन्हें भेंड़-बकरा बनाकर छोड़ देती थी। सलहेस इस तरह से पचला के फेर में पड़ जाते हैं। इसी तरह काफी दिन बीत जाते हैं। उन्हें अपनी मुक्ति का कोई मार्ग नहीं सूझ रहा था। एक दिन जब सलहेस भेंड़ के रूप में घास चर रहे थे कि उन्होंने सात सौ व्यापारियों को लदनी लादे हुए आते देखा। भेंड़ बने सलहेस उन व्यापारियों से पूछते हैं कि आपकी लदनी कहां जाकर उतरेगी।

व्यापारी सब एक भेड़ के मुंह से आदमी की आवाज सुनकर आश्चर्य में पड़ जाते हैं। तब सलहेस अपना परिचय देते हैं और कहते हैं कि पचला धोबिन ने उन्हें अपने जादू से वश में किया हुआ है। वह दिन में उन्हें भेंड़ा बनाकर छोड़ देती है और रात में उन्हें आदमी बनाकर उनके साथ भोग-विलास करती है। उन्हें जल्दी से पचला के जादू से बाहर निकालें, क्योंकि अगर जल्दी ही उन्हें मुक्त नहीं कराया गया, तो वह ज्यादा दिन तक जीवित नहीं बचेंगे।

व्यापारी सब पकड़ी राज आकर सलहेस की माता को उनके हाल की जानकारी देते हैं। उसके बाद वह हीरामन तोता को मोरंग भेजती है। हीरामत तोता तड़के छप्पड़ फाड़कर पचला धोबिन के घर में प्रवेश करता है। तब सलहेस जाग रहे थे और वह हीरामन तोता को पहचान लेते हैं। सलहेस हीरामन को अपनी जान बचाकर वहां से भाग जाने का आदेश देते हैं। हीरामन तोता पकड़ी राज लौटकर सलहेस की मां को उनका हाल बताता है। तब वह सलहेस के भाई मोतीराम को बुलाकर कहती है कि बौउआ, अब सलहेस को तुम्हारे मामा बहौर ही बचा सकते हैं, क्योंकि पचला धोबिन बहुत बड़ी जादूगरनी है। तुम जाओ और अपने मामा को बुला लाओ।

बहौर उस समय घर-बार छोड़कर बीजू वन में तपस्या कर रहे थे। मोतीराम काफी जतन के बाद बहौर से मिल पाते हैं और उन्हें सारी परिस्थितियों से अवगत कराते हैं। सलहेस का हाल

जानकर बहौर बांसुरी बजाकर एक बाघ को बुलाते हैं और बाघ पर सवारी करते हुए अपने गुरु छेछन डोम के पास जाकर मदद की गुहार लगाते हैं। अपने गुरु और मोतीराम के साथ बहौर मोरंग की सीमा पर पहुंचते हैं।

मोरंग की सीमा की रखवाली का जिम्मा एक डोम सरदार के पास था और उसकी आज्ञा के बिना कोई भी व्यक्ति मोरंग में प्रवेश नहीं कर सकता था। वह भी जादू जानता था। दोनों के बीच जादू युद्ध होता है, लेकिन डोम सरदार हार जाता है, जिसके बाद छेछन राम इस तरह से जादू मारता है कि डोम सरदार कमर भर जमीन में गड़ जाता है और उसका सिर पीछे की तरफ घूम जाता है। उसके बाद छेछन राम कहते हैं कि तुम इसी अवस्था में पड़े रहो और जब हम मोरंग से वापस जाएंगे तब तुम्हें इस अवस्था से मुक्त कर देंगे। इसके बाद वे सभी मोरंग में प्रवेश करते हैं और थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने पर उन्हें पीपर के पेड़ के नीचे सलहेस का हाथी भौरानंद दिखता है, जिसे वे मुक्त करा लेते हैं। तब बहौर, मोतीराम और छेछन राम तीन रात उसी पीपर के पेड़ के नीचे बिताने का फैसला करते हैं।

अगली सुबह मोतीराम, बहौर और छेछन राम, पचला धोबिन के महल तक पहुंचने का फैसला करते हैं। पचला धोबिन लोंगफूल की मदद से मोतीराम को भी सुग्गा बनाकर पिंजरा में बंद कर देती है। छेछन राम बहुत कोशिश करते हैं कि वह पचला धोबिन के घर का पता लगा लें, लेकिन वे विफल रहते हैं। इधर पचला धोबिन अपने जादू से पूरे मोरंग में हैजा फैला देती है। हैजा से लोगों की अकाल मृत्यु होने लगती है। हैजा से केवल एक घर बच जाता है, जो छेछन राम से मदद मांगता है। छेछन राम अपने जादू से पचला धोबिन का जादू काट देता है और उस घर की मदद करता है। इससे न केवल वहां रहने वाले लोगों की जान बच जाती है, बल्कि सभी के प्राण वापस आ जाते हैं। बदले में वे पचला धोबिन के घर का पता बता देते हैं। इसके बाद छेछन राम पचला धोबिन से जादू की लड़ाई करते हैं। अंतत: सलहेस और मोतीराम को आजाद कराकर और पचला धोबिन को लेकर पकड़ी राज वापस लौट जाते हैं। ।।-।।

4. ज.अ. ग्रियर्सन द्वारा टंकित पाठ

लोकगाथा राजा सलहेस को पहली बार जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने किसी अज्ञात डोम गायक से सुनकर लिपिबद्ध किया था। ग्रियर्सन 1973 में इंडियन सिविल सर्विस के अफसर के रूप में भारत आए थे और बंगाल में नियुक्त किए गए थे। भारतीय भाषाओं के अध्ययन में उनकी खास रुचि थी और काम के अतिरिक्त वे अपना ज्यादातर समय संस्कृत, प्राकृत**,** पुरानी हिन्दी एवं बांग्ला समेत अन्य भाषाओं के अध्ययन में बिताते थे।

1873 और 1869 के कार्यकाल में डॉ. ग्रियर्सन ने अपने महत्वपूर्ण खोज किए, जिसमें उत्तरी बंगाल के लोकगीत, कविता और कथाएं शामिल हैं। जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल (1877), राजा गोपीचंद की कथा (1878), मैथिली ग्रामर (1880), सेवेन ग्रामर्स ऑफ द डायलेक्ट्स ऑफ द बिहारी लैंग्वेज (1883-1887), इंट्रोडक्शन टू द मैथिली लैंग्वेज; ए हैंड बुक टू द कैथी कैरेक्टर, बिहार पेजेंट लाइफ, बीइंग डिस्क्रिप्टिव कैटेलॉग ऑफ द सराउंडिंग्स ऑफ द वर्नाक्युलर्स, जर्नल ऑफ द जर्मन ओरिएंटल सोसाइटी (1895-96),

कश्मीरी व्याकरण और कोश, कश्मीरी मैनुअल, पद्मावती का संपादन (1902) आदि उनकी कुछ महत्वपूर्ण रचनाएं हैं।

बहरहाल, डॉ. ग्रियर्सन लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इंडिया की वजह से जाने जाते हैं। 1885 में प्राच्य विद्या विशारदों की अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस ने विएना अधिवेशन में भारतवर्ष के भाषा सर्वेक्षण की आवश्यकता पर जोर दिया था। तब 1888 में ग्रियर्सन की अध्यक्षता में यह सर्वेक्षण शुरू किया गया था। ग्रियर्सन ने 1903 तक यह सर्वे किया और कई तथ्य जुटाए, जो 11 खंडों में है। इसमें भारत की 179 भाषाओं और 544 बोलियों का विस्तारपूर्वक सर्वेक्षण है।

ग्रियर्सन के कार्यकाल के दौरान बतौर एसडीएम उनका पदास्थापन मधुबनी में भी हुआ था और इसी समय मिथिलांचल के संस्कृति से उनका लगाव हुआ। 1881 में उन्होंने ऐन इंट्रोडक्शन टू द मैथिली लिटरेचर ऑफ नॉर्थ बिहार, क्रिस्टोमैथी एंड वोकैबुलरी पुस्तक लिखी, जिसमें राजा सलहेस की लोकगाथा पहली बार लिपिबद्ध मिलती है। इस पुस्तक में 'अथ गीत राजा सलहेसक' शीर्षक नाम के अध्याय में पूरी गाथा इक्कीस खंडों में मिलती है। अपनी पुस्तक की भूमिका में ग्रियर्सन लिखते हैं कि उन्होंने इस गाथा को एक डोम से सुना था और उसे शब्दश: लिपिबद्ध किया है।
गीत से पहले उन्होंने राजा सलहेस लोकगाथा की एक छोटी सी भूमिका लिखी, जिसमें उन्होंने लिखा कि-

It (the song of Raja Salhes) is most popular throughout the district amongst the low cast people, and is printed word for word taken down from the mouth of a Dom. Salhes was the first Chaukidar, and is much worshiped by Dusadhs, a cast whose profession is to steal and to act as Chaukidars, preferably the former.

Throughout Tirhut, Salhes Asthans can be seen under the village papal tree, composed of a raised mud platform surmounted by mounted figures made of clay, representing the various characters of the song. Here the Dusadhs worship him.

Although a song, it is written in prose and is chanted, rather than sung. Note that, throughout, Transitive Verbs in the past tense frequently take infiections with properly belong only to Neuter Verbs.-

ग्रियर्सन द्वारा लिपिबद्ध लोकगाथा राजा सलहेस

1. भेल भिनसरवा ठाढ़ि दरबाजा गै मालिनी कर जोरि मनती करै छथि देव मुनिक नाम, सुनु इन्दासन छपन कोटि देवता जे इन्द्र जनम देलैन्हि छठि राति सोइरीघर में ताहि दिन लिखि देल सलहेस सन बर। हुनक कारण अचरा बान्हलि पर पुरुष मुंह नहि देखलि, जनम पाए सिन्दुर नहि पेन्हलि। हुनि स्वामीक कारण कांच बांसक कोहवर बान्हलि, रचि रचि लाली पलंग सेज झारि ओछाओलि, हुनका कारण। सिकिया चीरि बेनिया बनाओलि स्वामी कारण। गौरी आओत ना।

2. हाहा गे। भेल भिनसरवा, कोइलि बोलइत, दरबजबा ठाढ़ि, कल जोरि मिनति करै छथि छपन कोटि देब केर नाम पर। सुनु इन्द्रासन लोक छठि राति जाहि दिन जनम देलैन्हि सोइरी घरमे ताहि दिन लिखि देल सलहेस सन बर। बालपन अचरा बान्हलि, परपुरुष मुंह नहि देखलि, जनम पाए सिन्दुर नहि पेन्हलि। हुनका कारण कांचे बांसक कोहवर बान्हलि, लाल पलंग सभरंग सेज ओछाओलि, सिकिया चीरि बेनिया बनाओलि। गौरी आवत।

3. नान्हिटासं पोसलहुं, एतेक वस्तु आनिके घरमे रखलहुं, तैओ न स्वामी सलहेस ऐलाह। हुनका कारण फूलबाड़ी रोपलि, रंग-रंग फूल आनिल लगाओलि, बेली फूल, चमेली, ओ बुलकुंज, नेवार तेखरिक फूल फूलबाड़ी लगाओलि, हुनि सलहेसक कारण सांची बीड़ा पान लगाओलि, भेदनी फूल गांजा आनि लगाओलि, तैओ सलहेस मोरंग नहि आएल। बिना पुरुष सै कौना दिवस गमाएब, एहि सोग सन्तापसं तेजि दितहु मोरंग राज, देस पैसिके स्वामी तकतिहुं। स्वामी सलहेस जो मिलतथि, स्वामी सलहेस लेल राज भोगितहुं, नहि मिलताह हिआ हारि घुरब, सकोग सनताप सौं पानी धसि खसबस फेर पलटि मोरंग नहि आएब। जनम सों गहना गढ़ाए राखलि कहिओ नहि पहिरलि, आइ मन होइअछि जे गहना पहिरि ऐनामे देखितहुं, जे केहन लगै अछि, सूरति।

4. गहना पहिरि बैठलि मालिनी सुरखी देखै ऐनामे। बड़ सुन्दर लगै अछि एक रती सिन्दुर कारण मांग उदास लगै अछि। तखन दमसि उठलीह घरसं, बिलकुल गहना

खोंइछा बांधलि, घरसं चलि भेलि मालिनी। नगर गुजरात तेजि देब, जहां भेटताह स्वामी सलहेस देस पैसि ताकब, जौं कतहुं मिलताह स्वामी, तौं लैक आएब मोरंग राज, नहि मिलताह हिआ हरि लौटब लोंग संतपासं बुड़िके मरब।

5. भोर होइत भिनसरवा कनैति घरसं बाहर भेलि, चारू दिस ताकथि, बाट ठाढ़ि पचताबथि जे नहि भेटै बाट बटोही, नहि भेटै संग-समाज ककरा दिआ समाद पाठाएब। हिआ हारिके चललीह मालिनी कनैत चललीह मालिनी स्वामीक उदेस। डेगे डेगे चललीह, जोजनभरि आए जुमलीह अपना फूलबाड़ी में। हुनक कानब सुनि संग-समाज सखी बहिन भोर होइत आइलि हुनका फूलबाड़ी, तखन जाए पुछबहुन्हि सखीकं जेन कोन बेड़ा है फूलबाड़ीमे कानब, की हुनक माए बाप गारी देलक, की परोसिआ उलहन देलक ताहि विरहं ऐलीह फूलबाड़ी।

6. तखन पूछै छथिन्ह चम्पा जे की जानि घरसं बाहर भेली। तब कहै छलथिन्ह दौना मालिनी एक सलहेसक कारण घर तजलहुं, घर तेजि स्वामी सलहेसक कारण चललहुं। पांचो सखि चलली कमला घाट जे कमला घाट मे स्वामी सलहेस हाथी नमावै औताह, ओहिठाम जं मिलताह स्वामी सलहेस तं लाएब जादू सं लोभाए। आनि अपना फूलबाड़ी मड़वा बान्हि बिआही देब, तोहरा छाड़ि कोनो सखी नहि द्रिष्ट रोपब, तील कुश लै उसरगि देब। तं पांचो बहिनि चललीह कमला घाटमे, चारू दिस बाट ताकथि जे कोनो दिससं सलहेस औताह। तखन चीर उतारि तेहठाम राखलि तेल फूलेल कमलामे भसाए देलि।

7. कमलामे भसाए कल जोरि मिनति करै अछि, जे जलदी सलहेसकं मंगाए दिए जे दरसन होए। पांचो बहिनी एतवा कहिके कमलामे डूब देलैन्हि। आसन डोलि गेल। छपन कोटि इन्द्र देवता जाए के पैठल जहां बैठल कचहरीमे तहिठाम, उदमत लगाए देल। सबटा हाल कहि देल सलहेसकं, तोहरे कारन पांच सखी बारह बरस अचरा बान्हि, आवै कहब कमला घाट स्वामीसं दीदार हैत। एतबा समाद सलहेसकं गेल अछि, सलहेस कहम अछि, जे हम नहि जाएब, सुगा पठाए बेदुली मंगाए इआरकं सहिदानी देखाए देव। तखन एतवा खबरि सलहेसकं भेल अछि लगले हुकुमक कदेल झिनमा खवास कैं डेउढ़ी सौं सुगा आनि दे, झिनमा खबास गेल अछि, लगले सात खंड देउढ़ी पंजरा टांगल जाए, झिनमा खबास पिंजरा उतारल तं पिंजरा उतारि लाएल, बीच कचहरी सलहेसकं आगा राखल, सुगा बहारके सुगवा उड़ाए देल। तर तेजल धरती उपर आसमान बिजली परती सुगवा देऐ चकभाउर चलि गेल कमलाघाट। पांचो बहिनि कमलामे खेलाए धमाउर उपरमे सुगा देऐ चकभाउर। चारू दिस नजरि खिड़ाबै, खन कनडेरिएं सुरखी परेखे, खन दृष्टि गेदुली पर देऐ ऐसनि झपट मारै सुगवा बेदुलीले भागल दौना मालिनीक मांगक लैल भागल। सुगवा धैल पकड़ियाक बाट जाइत जुमल साखु बन, जुमल पकड़िया राज कचहरी दुनु इआरके बीचमें ओनके ओन दै बेदुली नेड़ाए देल। बेदुली देखि बहुत मन छगुलक जकर बेदुली लाएल तकर तिरिया केहन सुरखी।

8. कहथि सलहेस, सुनह सुगा, जकर बेदली लैलाह से जे पिचौर करै तं धरम करम नहि बचतै से नहि, जाए बेदुली सखु बन पहुंचा दहक। जाए सुगवा सखु बन पहुंचल, असोक केर गाछपर बैठल। पांचो बहिनि तकैति हिआ हारुनी भेलि, जाइत चारि बहिनि घुरलीह हिआ हारिक, दौना मालिनीकं, कुसोथरि देलि अछि, होइत भोर सुग्गा

उड़ल आबिके बेदुली देल अछि दौना मालिनीकं लिअ मालिनी अपन बेदुली, जाए मोरंग राज फूलबाड़ीमे बैठब, हम सलहेसकं पठाए देब।

9. पलटि ऐलीह मालिनी अपना फूलबाड़ी। होइत भोर सलहेस पहुंचल, राति बिराति जाए जुमल मोरंग राज फूलबाड़ी, होइत भोर सलहेस आएगा फूलबाड़ी।

10. भेल भिनसरवा बोलल कोइलि। उठलीह मालिनी फूलडाली लेने फूलबाड़ी ठाहि फूल तोड़ि गूंथलि गृमहार सलहेस ला। ताहि बेरि जुमल अनदेसिया जोर। चुहड़मल मोकामागढ़सं। दिन दुपहरिया घर-घर फिरै, पकड़िया टेबने फिरै, पकड़िया चुहड़मल योग हलेबी नाहि मिलै, कतैत मिलल राजा भीमसेनक डेउढ़ी। डेउढ़ी टेबि चलल चुहड़मल दुइ चारि कोश अंतर जगलमे डेरा खसाओल। सुमिरै लागल देवि असावरि घरक गोसाउनि। जनमसं पुजलहुं मोकामागढ़मे, कहिओ जन्मभरहि चोरी नहिं कैली, सुनन पकड़ियामे ननुआ सलहेस जन्म लेल, बड़ योगमन्त, चौदह कोस पकड़िया कोतबाली लिखाओल, हुनक डाकसं ककरो टंगरि साबित नहि होइ अछि जे हुनका पहरामे चोरी करै।

11. से जानि चुहड़मल चढ़िके आएल, झांटीक केस बांधल। दोहरि चरना चढ़ाओल, लाख दर लाख छुड़ी गतरमे बान्धल, कमरे ढ़ाल बान्दल। पेस्तर छूड़ी लेल हाथके, बैठल धरती मे। आसन लगाएके, देल पेटकुनिया धरतीमे, सेन्ह काटै लागल, सेन्ह काटि पहुंचल चुहड़मल जाहिर घरमे रानी हंसावती सूतलि सोनाक पलंगपर मुनहर घरमे, तहिठाम घरमे पहुंचल चुहड़मल चोर। हुनका सिरमामे सेन्ह फुटल जाए, चुहड़मल पलंग औठंघि बैसल। जाति दुसाध परतीत नहि करैए, मुड़ी उठाएके घरमे ताकै माल, कोनो माल नहि मिलल, देखल हंसावती सूतलि सोनाक पलंगपर, लाख दर गहना गतरमे। तकरा तजबीज करै चुहड़मल जे कोन चीज लेब। दुइ चीज लेब, सोनाक पलंग ओ रानीक गराक चन्द्रहार लेब। एतवा कहैतमे भनसरवा भेल, ताहिसं चन्द्रहार रानीक गराएं कोटि लेल, ओ रानीके उठाएके भीमसेनक खटियापर देल, ओ सोनाक पलंग माथापर रखि लेल।

12. होइत भिनसरवा भागि चलल ओहि सेन्ह दै, चारि कोसक तर दै ऊपर भेल जंगलमे। लगले मोसाफिरक भेस पकड़ि लेल, माल जोर बर जोर लेने जाइ अछि मोकामागढ़मे, जाइत गंगाघाट त्रिबेनिया पहर दीन उठैत गंगा पहुंचल। तब कहैत अछि गंगासं 'सुनह गंगा। चोरिकै आएल छी, परबत राजं राजा भीमसेनक गढ़सं ओ सलहेसक पहरासं लेने जाइ छी। कहिओ काल चढ़ै मुदै सलहेस तकरा पार मति करह, जाहि घड़ी पार करब हम सुनब आबिके धर्मक बांध बांधि देब।' एतबा कहि गंगा पार भै गेल ओहि पार मगहमे चलल मोकामा गढ़मे, सात खंड डेउढ़ी बीच में गाड़ल। ताधरि रानीक घरमे नींद नहि टूटल, केओ नहि जागल, डेउढ़ीमे सभक पहिले सलखी नौड़ी जागलि।

13. बाढ़नि लेने अंगना बहाड़ि ओसरवामे ठाढ़ि भेल, तजबीज कैर बिना पुरुषकं त्रिआ एतेक बेरि धरि सूतलि, तखन नड़ाय देलि बाढ़नि, धाए पहुचलि अन्दरात, केवाढ़ खोलि जगाए देलि हंसावती रानीकं उठू रानी एहन बज्र नीन्द भेल, कोन चोर आबि घर सेन्ह देल, एतैक कहैति मे रानी उठली हंसावती, रानी सेन्हदेखि गर्द कैल। ततबा बेरिमे दौड़ल बिलकुल नोकरिया, दौड़िके घेरल चारू दिस डेउढ़ी, ताकै चोरक बनार कतहुं नहि मिले। ताखन कानै लगलि हंसावती रानी, राजाक नमा पर कानै लागलि,

तखन कानि-कानि अचरा फारि कागज बनाओलि, नैनाक, काजर पोछिके मोसि बनाओलि, तखन बमा कनगुरियां चीरि कमल बनाओलि, लिखै लागलि। चोरीक हाल कहि देब राजा भीमसेनकं। एतए गढ़में री भेल, जनमक चौकीदार थिकाह सलहेस, हुनका कहबैन्हि जे चोर माल हाजिर करै, तौ लागि हुनका फुरसति नहि, एतेक चीठी लिखि सुदीन कै कहलि खवास मगाय लेलि, तकरा दिया चीठी राजा भीमसेनकं पठाय देलि।

14. होइत दुपहरिया चीठी पहुंचल राजाक पास। राजा भीमसेन चीठी देखि तमसाएल, लागे हुकूम देल बिलकुल बनौधिआक जे पकड़ि लाबह सलहेसकं। तखन दौड़ल बिलकुल बनौधिया, सलहेस नुकाए गेल, कतहुं नहि मिलल सलहेसक भांज। तखन पकड़िया ताकल, झील हील ताकल, तरेगना पहाड़ तालक, कतहुं न मिलै सलहेस भांज। हिआ हारि बैठल परतीक खेतमे, झखै लागल, ताहि बिरे में एकटा बुढ़िया बटोहिनि आबि गेलि, से पुछै लागलि जे एतेक बनौधिया कथी लै झखैत छी, तखन बनौधिआ कलह जे सलहेसक भांज बताए दे। तखन बुढ़िया कहै लागलि जे एकठाम हम देखलि सलहेसकं कलालक भट्टीपर दारू पिबैत, गांजा मलैत, करिया पगड़ी माथमे लालकी लाठी हाथमे, घोरूआ मांटी देहमे। एतेक सुनल बिलकुल बनौधिआ दौड़ल सलहेसकं पकड़े, चारू दीससं घेरि लेल कलालक भट्टी, तखन जाए पकड़ि लेल ओ मुसुक बांध बान्हि देल। तब पूछै लागल सलहेस बनौधिआके जे कोन जिआन भेल अछि जे हमरा बांधि देल अछि, से हाल कह। तखन कहै अछि बनौधिआ जे चलह कचहरी, राजा भीमसेन कहताह हाल, हम नहि जानी। आगा पीछा बनौधिआ बीचमे सलहेस के लेने जाए जुमल कचहरी, दाखिल कै देलक कचहरीमे, कल जोरि सलाम कैल बिलकुल बनौधिआ लिख समुझाय अपन बन्धुआ।

15. तखन कल जोरि कै ठाढ़ि भेल सलहेस, जन्म सं नौकरी कैल कहिओ फूलक साटी न लागल, आइ कोन बिखै भेज जे बन्धुआ बान्हि देल। तखन राजा भीमसेन हुकुम देल जे तोहरा अछैत घर में चोरी भेल, चोर माल पकड़ि कै हाजिर कै दह, तखन तोहरा फुरसति देबहु, बीचमे नहिं देबहु। तखन कहैत अछि सलहेस जे चौदह कोस पकड़िया चौकीदारी लिखाओल, चोरक बनार नहिं पाओल, आनू कागज जे चोरीक माल गेल अछि तकर तमसुक लिखि देब, जन्म-जन्म साधन कै देब, चोर माल हमर सक नहिं थीकि। तखन जनसं खिसिआएल राजा भीमसेन, देल हुकुम बनौधिया के लै जाह सलहेस के, उनटा बांध बांधि देब, नौ मन ढेंग उपर कै देब, काचे बांच के फठा सौ पीठि ओदारि देब, जाति दुसाध कबुल नहिं देब। तखन परल संकट मे सलहेस, तखन कानै लागल सलहेस, जे आब प्रान नहिं बांचत, आखिर मरना, अंकुर मेटल नहि जाएत, भाइ सहोदर मोतीरामसं बेंट नहि बेल, बिआही स्त्री सं भेंट नहि भेल, माए बुढ़िया धरि सौं भेट नहि भेल। सुमिरै लागल असाबरी घरक गोसाउनिकं जे जाएकै उढ़री तिरिया सतबरती दौना मालिनी होइत सूतलि फूलबाड़ी मे पलंगपर तकरा जाए कहब संवाद आबि कै कचहरी मे भेंटकै जाए।

16. एतबा सुनि दौना मालिनी उठलि चिहाए, ठाढ़ि भेलि दरबाजा पर गाइक गोबर लै सवा हाथ धरती नीपि लेलि, सभ देव मुनिक नाम अरोधि कं सुरजक माथे सगुन उचारै लागलि। सुरुज सांचे-सांचे सगुन उचारि दह जे कोन राज चोर बसैत अछि, केकर बेटा, केकर भगिना, की चोरक नाम थीक एतैक हाल कहि दह। तखन एतेक सुनि कै

उठलीह मालिनी, जुमलीह फूलबाड़ी मांझ, सोलहो सिंगार पेन्हि लेलि, जादूक फूलडाली बन्धाए लेलि फूल तोरै लगलि, रंग-विरंगक फूल तोड़ि लेलि, कांचे नौंग अराची तोड़ि लेलि। चललीह स्वामीक उदेस, जाए जुमलीह कचहरी मांझमे। कल जोरि मिनती कहैत अछि, राजा भीमसेन के कहै लागलि, जे बड़ सुकुमार हमर स्वामी, मारि सहल नहि जाइ छैन्हि, कनिएक बन्धन खोलि दिअ, जहां सौं होएत तहां सौं चोर माल हाजिर कै देब। ताहि पर तमसाएल दीमान जे त्रिआक जाति कहां से लैब चोर माल, जों लागि हाजिर करबं नहि, तो लागि फूरसति नहि देबौक। तखन राजा भीमसेन कहैत छथीन्ह जे बन्धन कोलाए दबौक, एक एकरार हमरा पास लिखि दह जे आठम दिन चोरमाल हाजिर करी, नहिं हाजिर करी तौ नौम दिन तोहरासं विवाह करी, तकर एकरार लिखि दाखिल करह, ओ लिखाए लेल। दौना मालिनी कहै लागलि जे सात दिन में चोर माल पकड़ि कै हाजिर कै देब, से दूनू तरफ एकरार भै गेल।

17. तखन उठलीह मालिनी सलहेसक बन्धन खोलै लागलि अपने हाथसं, आगा पाछा बिदा भेल। तखन सलहेस पुछे छथीन्ह मालिनी सं जे की कहिकै हमरा बन्ध खोलौलिंही। तखन मालिनी कहै लागलि जे अपन इजतिक एकरार लिखि आठ दिनक अन्दर जे चोर माल आनि देब ओ हाजिर कए देब, तखन अहांकं खोलाओलि अचि। तखन सलहेस कहैत छथीन्ह जे कोन चोर थिक, तब मालिनी कहै लागलि जे चुहड़मल मोकामागढ़मे बसैत अछि, जगतक भागि थिक, वैह चोराए कै लै गेल अछि। करू पैरूख सलहेस जे चोर माल पकड़िकै लै आबह, ओना नहि पकड़ल जाएत भेद बताए दैत छी जे नाउ नटक टोल , जाए कै सभटा वस्तु मंगनि मांगि कै ढोलक, मुगदर, खनती, झीलम, खटिया, माचिआ, सिरकी भैंसा लै आबह। सलहेस तखन मंगनी मांगि के लै आएल, सलहेस मालिनी कै पास सपुर्द कै देल। तखन कहैत छथीन्ह दौना मालिनी ई सभ भेद आओर बता दै छी, मथाक टीक मुड़ाए दिअ, जुलफी रखाए लिअ, तसरक धोती काछ लगाए लिअ, उत्तम रंग ताखी मूड़ बैठा लिख, घोरूआ माटी गत लगाए लिअ, दुइ चारि दण्ड लगाए लिअ, जे असले नटक भेस लागे।

18. तखन दौना मालिनी दछिनक चीर पहिर लेलि, पाटी समारि लेलि, नैना काजर पेन्हि लेलि, सीके-सीके मिसी बैठाए लेलि, चोली पहिर लेलि, हाथमे बांक पहिर लेलि, पैर मे काड़ा पहिर लेलि, मांग मे तारचन्द टिकुली पहिर लेलि, असले कसबीन भेलि। दुनु आदमी आल्हा गावै लागल, आल्हा सुनि कै मोरंगक लोक चौतरफी घेरि लेल, देखै लागल तमासा, चिन्हले लोग अनचिन्ह भै गेल, तखन ओहिठाम सौं डेरा उठाए देल, तखन चलल चोर पकड़ै, पहुंचल गंगाघाट पर। ता मं सुनलन्हि गंगा सलहेसक अबाइ, घाटे-घाटे नाओ डुबाइ, अपने ब्रहमनीक रूपधै कंगनिया चढ़लि। गेल गंगाक लगमे जे तकहु नाओ दिअ बताए जे पार उतरि कै जाएब ओहि पार। तखन गंगाजी कहै लगलथीन्हि जे नाओ गेल भसिआ, तों फीरि कै घर अप्पन जाह, घर हम नहि फीरिके जाए, सुखले नदी पार भै जाएगा। गरक चन्द्रहार उतारिके जलमे राखि देलि, ताहिरपर चढ़ि लेल नट नटिन, पार उतरि गेल मगह में। मगहसं मुंगेर जुमल, राति विराति बलबे पहुंचल, मोकामा गामे मे। गाछी ताकिकै रा खसाए देल, तभन सभ वस्तु टांगि देल, सिरकी तानि देल।

19. तखन अपने बैठल सलहेस, अपने नटिन चचलीह भरि मड़हरबा लै गामपर हरबा बेचै, ले गे गिरथाइन हरबा ले, तखन हरबा बेचैति-बेचैति पहुंचलि चुहड़क दरबाजा पर। सात नीन्द सूतल सात खण्ड डेउढ़ीमे अपने मालिनी ठाढ़ि भेलि दरबाजा पर,

जादू सं देलि जगाए। बक दै उठल चेहाए, सातो खण्ड केवाड़ खोलि कै दरबाजापर आएल, पूछै नटनिकं जे कथीला एलीह दरबाजा पर। जाति के हम नटिन थिकहु, दुई चारि पैसा खातिर हम एलहुं दरबाजा पर। तखन चुहड़मल कहैत छथिन्ह जे हमरा घरमे नहि माए, नहि बहीन, नहि इस्त्री, तखन हमरा सौं की लैबे ओजह इनाम। तखन बोले लागलि नटिन राति हम सूतल छलहुं अप्पन सिरकी मे, सपना में देखलि जे तोहरा घरमे एक चन्द्रहार छहु, से इनाम दह हमरा तब तोहरा मन पुराएब। तखन खुबसुरति देखि चन्द्रहार आनि देल जे हम चोरी कै लैलहुं केओलागढ़ सौ, राजा भीमसेनक घरसे, सलहेसक पहरा सौं से तोरा इनाम दैत छी। चलू, अपना सिरकी में ओहि पलंगपर मन पुराए देब। आगा माथापर पलंग, पाछू नटिनिआ गेल अपना सिरकी मे।

20. ता में सलहेस सिरकी तजि देल, लाबै गेल अपना भाई मोतीराम ओ भगिना कारीकन्तु, सात सौ हाथी मकुना लै आबि के सिरकी घेरल। ता मे नटनिया पलंग ओछाए देलि, ताहिपर चुहड़मल कै तेल फुलैल दै सुताए देलि। ता मे फरीछ भेल, जुमल सलहेस सभ लसकर लै, धरि लेल सिरकी बीचमे चुहड़मल सूतल। देवी असावरी देलि जगाए जे त्रिआ कारन मुदै तोर जुमल सलहेस। एतबा कहैत चिहाए, दोहरि काछ लगाए भै गेल ठाढ़, छुड़ी लेल हथवा, एक बेरि छरपल चुहड़मल उपर उड़ि गेल सौ पचास हाथ, खसल हाथिक हलकाक बाहर, लड़े लागल सलहेस सं। चुहड़मल जहिना पैसे बकरी में हुड़ार, तहिना छरपल फिरे चुहड़मल, जेम्हर छरपै तेम्हर हाथी कटिते जाएस सात सै मकुना कै एकदम सों काटि देल, तीनि राति दिन परल लड़ाइ, तखन तीनू बापूतके खेहारने फिरै परतीक खेत मे। उठलि नटिन, पकड़लि चूहड़मलक बांहि, हम जातिक कसबीन, हमरा लग कतेक मोसाफिर अबैथ अछि, तकरा सभ सौं लड़ने हमर रोज हरज होइत अछि, खीस तेजि दह, चलह सिरकी मे मन पुराए देब। चुहड़मल सिरकी मे आवि कै पलंग पर रहल सूति। नीन्द अहिद्रा राखि देल, चाल कैलि राजा सलहेस के और मोतीराम कैं आवि कै अप्पन मुदै बान्हू।

21. एतबा सुनि कै पलंग लगाए साते दिन मे चोर माल बान्हि कै चलल नट नटिनिआ, जुमल गंगा घाटपर चोर माल लैकै, गंगा मे सातो सौ हाथी जिआ लेलक जादू सौं, नटिनिआ गंगा भेगेल पार, रातुक चलबं दिन में पहुंचल राजाक कचहरी जाए, चोर माल देल समुझाए। चोर देखि कै राजा भीमसेनक धैरन नहि रखल, तखन चुहड़मल कें देलक खोलि, सभटा जवाब कहि देल जे हम निश्चै चोरी कैल सलहेसक नाम जानिकै हुनका पहरा मे। ई सुनि राजा भीमसेन खुशी भेल, पांचो टूक कपड़ा, पांचो हथियार, अपना चढ़ैक घोड़ी देल, बकसीस दै बिदा कैल। तखन दौना मालिनी लै राजा सलहेस भीमसेनक फुलबाड़ी करे जन्म भर रखबारी। इति ।।

5. लोकनाट्य राजा सलहेस: पात्र परिचय

लोकगाथा राजा सलहेस में राजा सलहेस के अलावा कई महत्वपूर्ण पात्र हैं, जिनका इस गाथा के मंचन के दौरान काफी महत्व है। इनमें से कई पात्र तो इतने सशक्त हैं कि मंचन के लिहाज से वे कई बार राजा सलहेस के किरदार पर आच्छादित होते दिखते हैं। उन सभी पात्रों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

I. **राजा सलहेस –** राजा सलहेस लोकगाथा के गाथा मुख्य नायक हैं। इनका जन्मस्थान राज महिसौथा है और लोकगाथा में ये अपना परिचय जाति दुसाध के लड़के के रूप में देते हैं। लोकनाट्य के मंचन के दौरान सलहेस को महिसौथा के राजा के रूप में दिखाया जाता है। वह कई गढ़ों के राजा हैं। हालांकि, गाथा के मुताबिक, उनका मुख्य कर्म चौकीदारी करना या पहरेदारी करना है। वे पकड़िया गढ़ के राजा कुलेश्वर के यहां पहरेदारी करते थे, उससे पूर्व वह कुलेश्वर की फुलवारी की रखवाली का काम करते थे। सलहेस माता भगवती के अनन्य भक्त हैं।

II. **दौना मालिन –** दौना मालिन राजा सलहेस की मुख्य प्रेमिका है, जो तरेंगना (मोरंग) के राजा हिमपति महेश्वर भंडारी की कई बेटियों में एक है। दौना मालिन समेत महेश्वर भंडारी की अन्य बेटियों हीरा, रेशमा, कुसमा, हिरिया और जिरिया को मालिन राजकुमारी कहा जाता है। ये सभी मालिन राजकुमारियां तंत्र-मंत्र और जादू टोना में काफी पारंगत थीं। राजा सलहेस के प्रेमपाश में अंधी ये मालिन राजकुमारियां राजा कुलेश्वर की फुलवारी के संवर्धन में तैनात सलहेस को कभी भौंरा तो कभी भेंड़ा बनाकर रखती थीं। बाद में सलहेस अपने मामा की मदद से इन राजकुमारियों के चंगुल से आजाद होते हैं। हालांकि मालिन राजकुमारियां कई स्थानों पर विपत्ति में सलहेस की मदद भी करती हैं।

III. **महेश्वर भंडारी –** ये तरेंगना (मोरंग) के राजा हैं, जिन्हें हिमपति की उपाधि भी मिली हुई है। ये मालिन राजकुमारियों के पिता हैं और मालिन राजकुमारियों में से एक दौना मालिन सलहेस की मुख्य प्रेमिका है।

IV. **राजकुमार चंद्रावती –** पकड़िया गढ़ के राजा कुलेश्वर की बेटी का नाम राजकुमारी चंद्रावती है। यह भी राजा सलहेस के प्रेमपाश में फंसी हैं और सलहेस को अपना बनाने के लिए दृढ़संकल्प हैं। यह सलहेस से एकतरफा प्रेम करती हैं। सलहेस के द्वारा प्रणय निवेदन अस्वीकार किए जाने के बाद ये साजिशन सलहेस को अपने पिता से कहकर बलात्कार और चोरी के आरोप में जेल में डलवा देती हैं। बाद में सलहेस दौना मालिन की मदद से आरोपमुक्त होकर राज महिसौथा लौटते हैं।

V. **चूहड़मल –** पकड़िया गढ़ के राजा कुलेश्वर की बेटी राजकुमारी चंद्रावती के महल की परहेदारी करने वाला राजा चूहड़मल मोकामा का राजा है। किसी कारणवश वह कुलेश्वर के यहां पहरेदारी के काम में लगा हुआ है। चूहड़मल राजा सलहेस लोकगाथा में सलहेस का मुख्य प्रतिद्वंदी है और सलहेस से उसका युद्ध भी होता है, जिसमें वह मात खाता है। गंगा के दक्षिण में चूहड़मल की एक अन्य गाथा लोकप्रिय है, रेशमा-चूहड़मल की कथा। इसमें रेशमा सवर्ण नायिका है और चूहड़मल निम्न जाति का नायक। रेशमा चूहड़मल पर आशक्त है, लेकिन वह रेशमा के प्रणय निवेदन को ठुकरा देता है।

VI. **सत्यवती या सतवर्ती या फूलवंती –** फूलवंती बनाटपुर के राजा की बेटी और राजा सलहेस की पत्नी है। लोकगाथा के अलग-अलग पाठों में फूलवंती के कई किरदार मिलते हैं। कुछ पाठों में फूलवंती को मालिन बहनों में सबसे बड़ी माना गया है, जो तंत्र-मंत्र विद्या में सिद्ध थी।

VII. **बनसप्ति –** राजा सलहेस की बहन बनसप्ति है। कुछ पाठों में बनसप्ति को सलहेस की बड़ी बहन बताया गया है, तो कुछ पाठों में उसे सलहेस की छोटी बहन भी बताया गया है।

VIII. **मोतीराम और बुधेसर –** दोनों सलहेस के भाई हैं। मोतीराम लक्ष्मण की तरह ही सलहेस के साथ हमेशा रहते थे। मोतीराम और बुधेसर भी सलहेस की तरह ही मल्ल युद्ध के कुशल योद्धा थे और इन दोनों की मदद से सलहेस कई लड़ाइयां जीतते हैं।

IX. **करिकन्हा (कारकिंत या कोरिकन्हा) –** राजा सलहेस के भगिना का नाम करिकन्हा या कोरिकन्हा है। यह भी सलहेस की तरह ही पराक्रमी है। करिकन्हा सतखोलिया के राजा शैनी और सलहेस की बहन बनसप्ती का बेटा है। गहवरों में करिकन्हा को सलहेस के साथ उनके हाथी पर हौदे में बैठा दिखाया जाता है।

X. **मंगला हजाम –** बनाटपुर में राजा सलहेस के विवाह के समय का हजाम।

XI. **केवला किरात –** राजा सलहेस के अंगरक्षक का नाम केवला किरात है।

6. राजा सलहेस से जुड़े महत्वपूर्ण स्थल

लोकगाथा राजा सलहेस में सलहेस से जुड़े कई स्थलों की चर्चा मिलती है, जिसका संबंध जन्म स्थान से लेकर बालपन की अठखेलियां, मल्ल युद्द, विवाह प्रकरण एवं अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं से है। लोकगाथा के आधार पर उन स्थलों की जो फेहरिस्त बनती है, वह इस प्रकार है-

I. राज महिसौथा

लोकगाथा राजा सलहेस के अनुसार, गाथा के मुख्य नायक सलहेस का जन्म राज महिसौथा में हुआ था। सलहेस के भाई मोतीराम और बुधेसर का जन्मस्थान राज महिसौथा है। यह स्थान नेपाल के सगरमाथा अंचल के सिरहा जिले में है। सिरहा नगरपालिका के वार्ड नंबर 7 के उत्तर कुछ दूरी पर राज महिसौथा पड़ता है। यहां राजा सलहेस का गवहर है, जहां साल में एक बार भव्य तरीके से पूजा अर्चना होती है। यहीं पास में एक सलहेस का किला भी है, जो अब पूरी तरह से खंडहर में बदल चुका है।

II. सलहेस फुलवारी

यह सिरहा जिला के एक अन्य महत्वपूर्ण नगरपालिका क्षेत्र लहान बाजार से चार-पांच किलोमीटर पश्चिम और राजमार्ग से एक किलोमीटर दक्षिण में करीब तीस-पैंतिस एकड़ के क्षेत्रफल में फैला विशाल भू-भाग है। नेपाल सीमा पर स्थित लदनिया, मधुबनी से इसकी दूरी करीब 35 किलोमीटर है।

कहा जाता है कि यह फुलवारी की सघनता नेपाल के किसी भी वन से अधिक थी। इस फुलवारी में राजा सलहेस का गवहर, दौना मालिन का मंदिर, मोतीराम का सिलहट अखाड़ा जैसे स्थल हैं, जिनका लोकगाथा में काफी महत्व बताया गया है। यहां राजा सलहेस के गहवर में पूजा का अधिकार दोनवारों को है। यह दोनवार बहुल आबादी वाला क्षेत्र है।

पकड़िया के राजा कुलेश्वर ने इस फुलवारी की सुरक्षा और उसके संवर्धन की जिम्मेदारी राजा सलहेस को दी थी। गाथा में इसकी चर्चा मिलती है कि तरेंगना के राजा हिमपति महेश्वर भंडारी की बेटी इसी फुलवारी में राजा सलहेस के साथ भ्रमण करती थी और बहुदा सलहेस की प्रतीक्षा में अपना समय व्यतीत करती थी।

इस फुलवारी की चर्चा हरम के फूल के बगैर पूरी नहीं हो सकती है। ऐसी मान्यता है कि फुलवारी के हरम के एक वृक्ष पर हर साल बैशाख के पहले दिन यानी सतुआनी के दिन दौना मालिन फूल माला की शक्ल में इस वृक्ष से लटक जाती है।

III. सिलहट अखाड़ा

राजा सलहेस की फुलवारी के पास ही एक काफी बड़ा चौर है, जो आसपास के इलाके में सिलहट अखाड़ा के नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि सिलहट अखाड़ा में राजा सलहेस अपने भाई मोतीराम के साथ कुश्ती लड़ते थे और यहां से फिर पतारि पोखर में स्थान करके मानिक दह से कमल का फूल तोड़कर राजमाता, कमला देवी, कुलदेवी असावरी और अपनी आराध्या माता भगवती की पूजा अर्चना करते थे।

IV. मानिक दह

सलहेस लोकगाथा का तीसरा महत्वपूर्ण स्थल मानिक दह है, जो लहान बाजार से करीब 13 किलोमीटर उत्तर पश्चिम में और उत्तर-पश्चिम राजमार्ग से उत्तर अवस्थित है। कहा जाता है कि मानिक दह में ही राजा सलहेस रोज स्नान किया करते थे। गाथा के अनुसार, मानिक दह में स्थाना करने के बाद सलहेस फुलवारी जाते थे और वहां से फूल तोड़कर राज महिसौथा में राजमाता और अपनी आराध्या भगवती की पूजा अर्चना करते थे।

V. पकड़िया गढ़

पकड़िया गढ़ लहना बाजार से करीब 10 किलोमीटर उत्तर पहाड़ की तराई में स्थित है। लोकगाथा के एक अन्य राजा कुलेश्वर का गढ़ है, जहां मोकामा के राजा

चूहड़मल राजकुमारी चंद्रावती की परहेदारी में तैनात थे। बाद में पहरेदारी का यह काम सलहेस को दे दिया गया था, जो सलहेस चूहड़मल और राजा कुलेश्वर के बीच टकराव का कारण बना।

VI. छपहा चौरी

मधुबनी जिला के बसोपट्टी थाना क्षेत्र में छपहा चौरी एक जगह है। यह बराटपुर गांव के उत्तर थोड़ी दूरी पर है। छपहा चौरी राजा सलहेस के ससुराल के रूप जाना जाता है।

VII. कमल दह

'मेचीदेखि महाकाली पूर्वांचल विकास क्षेत्र' से जुड़े एक अनुसंधान में इस जगह का नाम सामने आया है। कहा जाता है कि पकड़िया गढ़ में एक बड़ा सा पोखर था, जिसका नाम कमल दह है। सलहेस रोज इसी पोखर में स्नान करते थे और यहां से कमल का फूल तोड़कर राजमाता, कमला देवी और अपनी कुलदेवी असावरी की पूजा अर्चना किया करते थे।

VIII. त्रिवेणी

त्रिवेणी तीन नदियों कमला, बैजानी और ताऊखोला नदी के संगम स्थल को कहा जाता है, जो जनकपुर धाम से उत्तर पूर्व-दिशा में सिन्धुली और उदयपुर जिला की सीमा पर पहाड़ की तराई में स्थित है। यहां प्राचीन काल से ही कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर हर साल भव्य मेला लगता है। कहा जाता है कि यहीं सतखोलिया के राजा शैनी और राजा सलहेस की बहन बनसप्ति की मुलाकात हुई थी, जिसके बाद दोनों में प्रेम हुआ और फिर उन दोनों का विवाह हुआ। राजा शैनी और बनसप्ति का पुत्र करिकन्हा लोकगाथा का एक अन्य महत्वपूर्ण किरदार है, जिसे बहुत पराक्रमी बताया गया है। कहा जाता है कि करिकन्हा की मदद से ही राजा सलहेस को मोरंग राज से तब उन्हें आजाद कराया गया था जब मालिन राजकुमारियों ने उन्हें बंदी बना लिया था।

IX. सतखोलिया

त्रिवेणी के पास का ही एक क्षेत्र सतखोलिया के नाम से जाना जाता है। लोकगाथा के मुताबिक, यहां के राजा शैनी का विवाह सलहेस की बहन बनसप्ति के साथ हुआ था। इन दोनों का पुत्र करिकन्हा कई स्थानों पर राजा सलहेस की मदद करता है। राजा सलहेस के कई गहवरों में करिकन्हा को भी सलहेस के साथ हाथी पर विराजमान दिखाया गया है।

X. कोकचिया गधावर कदमाहा

कोकचिया गधावर कदमाहा राजा सलहेस की माता मन्दोदरी की प्रिय सखी विमला के निवास स्थान के रूप में जाना जाता है। यह स्थान त्रिवेणी जाने के क्रम में पहाड़

पर स्थित है, जहां विमला माता का मंदिर भी है। राजा सलहेस की माता की सखी का स्थान होने की वजह से यह मंदिर आसपास के क्षेत्र में प्रसिद्ध है और उसका मान है।

XI. ननमहरी

ननमहरी मंदिर नेपाल के धनुषा जिला में झनपुर धाम से करीब 32 किलोमीटर उत्तर पूर्व में पहाड़ पर स्थित है। इस मंदिर को लेकर एक कथा काफी प्रसिद्ध है। कथा के अनुसार, राजा सलहेस के काल में ही नारायण नाम के एक क्रूर व्यक्ति ने ननमहरी मंदिर में आम लोगों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया था। राजा सलहेस ने नारायण को चुनौती दी और मल्ल युद्ध में उसे परास्त करके मंदिर के द्वार सर्वसाधारण के लिए खुलवा दिए। इससे राजा सलहेस के यश और प्रतिष्ठा में काफी वृद्धि हुई और आम लोगों में उनका मान बढ़ा।

XII. पतारि पोखरी

यह स्थान नेपाल नेपाल के सिरहा जिला के लक्ष्मीपुर गांव में पड़ता है, जो पूर्व-पश्चिम राजमार्ग पर स्थित लहान बाजार से करीब 1 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां हर साल बैसाख के पहले दिन बड़ा मेला लगता है और उसके दूसरे दिन जुड़शीतल के दिन पतारि पोखरी में मेला लगता है, जहां विधि-विधान से राजा सलहेस की पूजा अर्चना की जाती है। यह स्थल राजा सलहेस की फुलवारी के समीप पड़ता है।

XIII. मोरंग

लोकगाथा राजा सलहेस में मोरंग स्थान का विशेष महत्व है। मोरंग को नेपाल के तरेंगना में बताया जाता है। तरेंगना के राजा हिमपति महेश्वर भंडारी थे। राजा सलहेस के प्रति महेश्वर भंडारी की बेटी दौना मालिन का **नाम** अमर है और संपूर्ण मिथिलांचल में उसका नाम सलहेस के साथ-साथ लिया जाता है। मालिन बहनें जादू में माहिर थीं और अपने जादू के बल पर वह सलहेस को कभी भौंरा, तो कभी भेंड़ा बनाकर अपने पास रख लेती थीं।
तरेंगना जिला में मोरंग किस स्थान पर था या मोरंग स्थान गाथा गायन की परंपरा में एक काल्पनिक जगह है, दोनों ही बातें ठीक-ठीक से नहीं कही जा सकती हैं। तरेंगना में आज मोरंग नामक कोई स्थान नहीं है। मैथिली के जाने-माने विद्वान श्री सुरेंद्र झा 'सुमन' तथा डॉ. रामदेव झा द्वारा संपादित पुस्तक 'मैथिली प्राचीन गीतावली' मोरंग स्थान की सर्वाधिक चर्चा की गई है।

7. राजा सलहेस की प्रासंगिकता

लोकगाथा राजा सलहेस या लोकनाट्य राजा सलहेस, जितना पूर्व काल में प्रासंगिक था उतना ही आज भी प्रासंगिक है। लोकगाथा और लोकनाट्य दोनों ही परंपराओं में सहजता से इसमें अतीत और वर्तमान के तत्व प्रत्यक्ष होते हैं, क्योंकि यह दोनों ही काल के बीच सेतु का काम करता है। आज भी जब इस लोकगाथा का गायन होता है या इस पर आधारित नाटक का मंचन होता है, तब लोग स्वाभाविक रूप से इसकी तरफ आकर्षित होते हैं। इसकी कई वजहें हैं-

पहली वजह तो यही है कि इस लोकगाथा या लोकनाट्य में जिस तरह से संगीत का इस्तेमाल किया जाता है, उतना शक्तिशाली संगीत या धुन शायद ही किसी लोकनाट्य में प्रयुक्त होता है।

बड़-बड़ भगती ऐ मोरंग में केलियै
तुलसी चौरा में जल हम ढारलियै
सिलानाथ सिलबत्ती पुजलियै
रबि-शनि हम पबनी ठेकलियै
पुरैन पात पर पूजा ढारलियै
बिसौर गैली बिसमंत्री पुजलियै
फुलहर गैली गिरजामाई पुजलियै
धनुषा गैली धनुष के पुजलियै
चुड़िया बाजार में चूड़ी फेरलियै
गेलियै जनकपुर सिरिजानकी पुजलियै
आ तैयो नै बैमनवा हमरा
दरसन दैलकै ने हो sssssssss...

मंचन के दौरान जब यह गीत नगाड़े की धुन पर गाया जाता है, तब यह धुन वहां मौजूद प्रेक्षक को इस कदर आह्लादित करता है कि वह स्वयं झूमने लगता है। गोस्वामी तुलसीदास ने जिस तरह से बारहमासा आदि छंदों का प्रयोग कर रामायण की रचना की और वह लोक में सहजता से ग्राह्य हो गया, उसी तरह से सलहेस लोकनाट्य को लोक-कलाकारों ने रचा और वह गरीब गुरबों में खुद-ब-खुद लोकप्रिय होता चला गया।

आज भी अगर सलहेस लोकनाट्य का मंचन होता है या लोकगाथा का गायन होता है, तो उसकी लोकप्रियता इतनी है कि वहां उपस्थित लोक स्वयं को उसके अलग-अलग किरदारों के साथ जोड़ लेता है।

यह तो हुई प्रेक्षकों की बात, अब बात कलाकारों की। राजा सलहेस लोकनाट्य से जुड़े गांव देहात के ज्यादातर कलाकार अशिक्षित हैं, लेकिन अशिक्षा उनकी कलात्मकता के राह में रोड़ा नहीं बन पाती। मैथिली लोकनाट्य के जानकार, नाटककार और लेखक महेंद्र मलंगिया एक उदाहरण के जरिए ये बताते हैं कि किस तरह से अशिक्षा के बावजूद सलहेस लोकनाट्य कलाकारों ने नाटक को संवर्धित किया है और उसे समसामयिक बनाए रखा है। उदाहरणार्थ वह बताते हैं कि मंचन के दौरान जब पकड़िया के राजा कुलेश्वर के सिपाही राजकुमारी चंद्रावती की शिकायत पर राजा सलहेस को पकड़ लेते हैं, तब कुलेश्वर मंत्री से कहते हैं कि मंत्री, सलहेस की छाती पर अस्सी मन का खारा रख दो, जिससे सलहेस की मौत हो जाए। तब मंत्री कहता है कि हुजूर अस्सी मन का खारा क्यों रखें, इसे दरभंगा या मधुबनी या जनकपुर के किसी अस्पताल में रख देते हैं, माछी (मक्खी) और मच्छर इसे काटकर मार देंगे।

कलाकार अपने आसपास के माहौल से अपने हेतु कलात्मक तत्वों को ग्रहण कर किस प्रकार सलहेस लोकनाट्य को न केवल समसामयिक बनाए रखा है, बल्कि उसे प्रासंगिक भी बनाए रखा है, उसका यह बेहतरीन उदाहरण है। सलहेस लोकनाट्य अन्य कई वजहों से भी आज तक अपनी प्रासंगिकता बनाए रखा है। राजा सलहेस अपने निजी जीवन में उच्च आदर्शों को अपनाते हैं और इसके जरिए वे नैतिक जीवन के उच्च आदर्शों एवं मूल्यों की स्थापना भी करते हैं। मसलन सलहेस का विवाह बनाटपुर की राजकुमारी सत्यवती के साथ होता है। चूंकि सलहेस सुंदर देहयष्टि वाले राजा हैं, उसके आसपास के कई गढ़ों की राजकुमारियां उनकी तरह आसक्त होती हैं। चाहे वह तरेंगना की मालिन बहने हों या पकड़िया गढ़ की राजकुमारी चंद्रावती, लेकिन स्वयं के विवाहित होने का हवाला देकर सलहेस सबका प्रणय निवेदन अस्वीकर कर देते हैं। एक राजा के लिए तब के दौर में दो चार रानियां रखना कौन-सी बड़ी बात थी, लेकिन सलहेस अंत तक एक पत्नीव्रता बने रहते हैं।

मिथिलांचल में सलहेस इस वजह से भी प्रासंगिक बने हुए हैं, क्योंकि लोक सांस्कृति में वे मगध या गंगा के दक्षिण पर मिथिलांचल या गंगा के उत्तर के प्रभुत्व के प्रतीक हैं। राजा सलहेस मिथिलांचल के थे और चूहड़मल मोकामा से आते थे, जो मगध का हिस्सा माना जाता रहा है। मल्ल युद्द में सलहेस ने चूहड़मल को परास्त किया था और कई अवसरों पर चूहड़मल को सलहेस के हाथों हार का सामना करना पड़ता है।

अर्थात् सलहेस न केवल चरित्रवान थे, बल्कि लोक-कल्याण और सामाजिक समरता के लिए दृढ़संकल्पी भी थे। उनके चरित्र ने और लोक-कल्याणकारी भावना और सामाजिक समरसता के सिद्धान्त ने दुसाधों और पासवानों को सामाज में उठने का संबल दिया। इसका भी उदाहरण महेंद्र मलंगिया देते हैं। वे सलहेस से जुड़ी एक कथा कहते हैं, जिसके अनुसार

‘एक बार राजा सलहेस अपने गहवर के पास अपने भाई मोतीराम के साथ कुश्ती खेल रहे थे। तब गांव के ही एक ब्राह्मण दबंग ने उनके गहवर के आगे थूक दिया। यह देखकर सलहेस ने कहा कि तुमने ऐसा क्यों किया। तब वह ब्राह्मण सलहेस को कुश्ती के लिए ललकारता है और कहता है कि अगर सलहेस ने उसे कुश्ती में हरा दिया, तब वह कभी वहां नहीं थूकेगा। सलहेस और उस ब्राह्मण दबंग में जोरदार कुश्ती होती है और अंतत: सलहेस उस दबंग को हरा देते हैं। इसके बाद से ब्राह्मण दबंग अपनी गलती मान लेता है और दोबारा गलती नहीं करने का वचन देता है।’

इस कथा में सलहेस जिसे पराजित करते हैं, वह मात्र कोई दबंग नहीं है। वास्तव में वह समाज में अगड़ी जातियों का प्रतिनिधित्व करने वाली सोच है और सलहेस उस सोच को परास्त करते हैं। यहां सलहेस के गहवर के सामने थूकना भी प्रतीकात्मक है और वह इस बात का प्रतीक है कि समाज में अगड़ी जातियों की सोच निचली जातियों के प्रति किस प्रकार की थी। इस सोच को पराजित करने के कारण सलहेस गरीब गुरबों के नायक बन जाते हैं।

साहित्य की दृष्टि से सलहेस के व्यक्तित्व का चरित्र चित्रण कीजिए। सलहेस चरित्रवान तो थे ही, अत्यंत सुंदर थे और प्रेम के पुजारी थे। लेकिन उनका प्रेम दैहिक और लौकिक से ज्यादा आत्मीय और अलौकिक था, नैसर्गिक था। यह ठीक उसी तरह से था, जैसा रामायण में भगवान राम का सीता के साथ। उनके उन्हीं गुणों के कारण राजा सलहेस के गहवर भी बने और उनकी पूजा भी जाती है।

यहां एक बात और गौर करने वाली है, जो उपरोक्त बातों को सार्थक बनाती है। संपूर्ण मिथिलांचल में सलहेस के गहवर हैं। जो लोग भी सलहेस के गहवर में पूजा अर्चना के लिए जाते हैं, वे कभी भी अपने लिए धन-धान्य या दीर्घायु होने की कामना नहीं करते हैं। वह अपने लिए बल मांगते हैं। गहवर और उसमें सलहेस की प्रतिमा को इस रूप में भी देखा जा सकता है कि वह एक मंदिर है और सलहेस उसके देवता। सलहेस को गहवर में स्थापित कर दुसाध और पासवान जातियों ने अपने लिए आराध्य की व्यवस्था की। चूंकि अगड़ी जातियों के द्वारा वे पददलित थे, लिहाजा वे अगड़ी जातियों को चुनौती देना चाहते थे। इसके लिए सलहेस जैसा बलशाली होना जरूरी था, इसलिए जो कोई भी सलहेस के गहवर में जाता था, वह अपने लिए बल या शक्ति मांगता था या आज भी आमतौर पर वह अपने लिए शक्ति ही मांगता है।

४. गाथा आधारित नाच एवं आधुनिक मंचन

संपूर्ण मिथिलांचल एवं बिहार के कई अन्य हिस्सों में निचली जाति के लोकनाट्य को नाच के नाम से भी संबोधित किया जाता है। नाच लोक प्रदर्श कलाओं के लिए एक सामान्यीकृत शब्द के रूप में उपयोग में लाया जाता है, मसलन अगर वह लोकनाट्य है, तब उसे नाच कहेंगे, गाथा गायन है, तब भी उसे नाच कहेंगे और नृत्य संगीत के कार्यक्रम को भी नाच ही कहेंगे। ऐसा इसलिए भी कहा जाता रहा है, क्योंकि इन कार्यक्रमों में हिस्सा लेने वाले कलाकार युवक होते थे।

अगड़ी और दलित जातियों की लोक कला का यह नाच शब्द एक भेद भी है। ऐसा क्यों, यह बताते हुए पटना के जाने-माने रंगकर्मी और दलित लोक-कलाओं का विवेचन करने वाले हसन इमाम कहते हैं कि अगड़ी जातियों ने दलित जातियों की लोक-कलाओं को खारिज करने के लिए नाच शब्द को प्रचलन में लाया। चूंकि कलाकार ज्यादातर दलित पिछड़ी जातियों से आते थे, उन्होंने उनका अपमान करने के लिए उनके लोकनाट्यों को नाच का नाम दे दिया। लोकनाट्यों को लेकर यह एक अलग विवेचना का विषय है।

बिहार में सलहेस नाच को परंपरा और आधुनिकता, दोनों ही श्रेणी में देखने की जरूरत है। राजा सलहेस के परंपरागत लोक नाच परंपरा पर आधारित कई लोकनाट्य तैयार किए गए और उनका मंचन भी किया गया है, लेकिन क्या उन्हें लोकनाट्य कहा जाए? मधुबनी के

रंगकर्मी और लोकनाट्यों के अध्येता महेंद्र मलंगिया इससे इनकार करते हैं। वह लोकनाट्य को पारिभाषित करते हुए कहते हैं कि लोक द्वारा रचित, लोक भाषा में और लोक के लिए जिन नाटकों को गढ़ा गया है, उसे ही हम लोकनाट्य कहेंगे।

मधुबनी में लोक नाट्यों पर आधारित नाटक की एक तरह से शुरुआत करने वाले जटाधर पासवान भी महेंद्र मलंगिया की बात से इत्तेफाक रखते हैं। जटाधर कहते हैं कि लोक नाट्यों की मूल आत्मा के साथ छेड़छाड़ कर आज कुछ भी मंचित करने की परिपाटी बनती जा रही है और यह परिपाटी लोक नाटकों की परंपरा पर गहरा आघात कर रही है। दरभंगा के रंगकर्मी अविनाश चंद्र मिश्र भी कहते हैं कि हम लोक नाट्य परंपराओं पर आधारित समानान्तर नाटक रच सकते हैं और उसका मंचन भी कर सकते हैं, बशर्ते उससे लोकनाट्यों की परंपरा पर कोई आघात नहीं हो।

इन परिभाषाओं और विचारों के आलोक में अगर हम सलहेस नाच को देखें, तो बिहार में इसके दो स्वरूप सामने आते हैं। पहला, **लोकनाट्य राजा सलहेस,** जिसे हम मनोरंजन प्रधान नाटक कह सकते हैं और दूसरा **आधुनिक सलहेस नाटक,** जो सीधे-सीधे साहित्यिक नाटक है और विवेचना की दृष्टि से हम उसे सामाजिक-राजनीतिक समस्यापरक नाटक की श्रेणी में रख सकते हैं।

i. लोकनाट्य राजा सलहेस

लोकनाट्य राजा सलहेस या सलहेस नाच का मंचन आज भी वृहद मिथिलांचल क्षेत्र में परंपरागत रूप से किया जाता है। दरभंगा, मधुबनी, सहरसा, सुपौल, भागलपुर, मोकामा समेत बिहार के कई जिलों में नाच कंपनियों की जानकारी मिली है। इनमें से ज्यादातर नाच कंपनियां मधुबनी और उसके आसपास के क्षेत्र में सक्रिय हैं।

इनसे जुड़े कलाकार नाटक के किरदारों का चरित्र चित्रण, उनके संवाद, उनकी संवाद अदायगी और उनकी भाव-भंगिमाओं की जानकारी पीढ़ी दर पीढ़ी भावी कलाकार को हस्तांतरित करते हैं। आमतौर पर कलाकार के घर के बच्चे और किशोर या नाच कंपनियों के साथ काम करने की इच्छा पाले कोई किशोर या युवक नाटकों और नाचों को देखता है और देखकर ही नाटक करना, संवाद आदायगी या नाटकों का निर्देशन सीखता है।

परंपरागत रूप से श्रुति परंपरा पर आधारित राजा सलहेस नाच पूरी तरह से राजा सलहेस के गाथा गायन पर आधारित है और लोकगाथा राजा सलहेस से ही अपने लिए विषय वस्तु और कथानकों का चुनाव करती है। गंगा पार और नेपाल की तराई के बीच के प्रदेश में आमतौर पर राजा सलहेस का गाथा गायन तरह से किया जाता है। ग्रियर्सन ने जिन्होंने लोक गाथा राजा सलहेस का पहला पाठ मुद्रित करवाया था, लिखा है कि यह एक गद्यगीत की तरह है, जिसका लयात्मक पाठ ज्यादा लोकप्रिय है। राजा सलहेस का गाथा गायन दो तरह का मिलता है:-

पहला, **एकल गायन** और दूसरा **सामूहिक गायन**।

एकल गायन:- राजा सलहेस के एकल गायन की परंपरा के कलाकार अब तेजी से कम होते जा रहे हैं। नेपाल से सटे उमगांम में लोक गायक गंगाराम जो आसपास के इलाकों में सलहेस के बड़े कलाकार के रूप में ख्यातिलब्ध हैं, कहते हैं कि एकल गायन की परंपरा

इसलिए खत्म हो रही है, क्योंकि अब किसी भी युवा कलाकार में इतना संयम नहीं कि वह सात खंडों में विभक्त राजा सलहेस की महागाथा को सीखे। उसे कंठस्थ करने में सालों लग जाते हैं और अब कोई कलाकार गाथा गायन की इस साधना में इस तरह से समय लगाने को तैयार नहीं है।

एकल गायन मंच पर और मंच के बिना ही होता है, जैसे सलहेस स्थान पर, किसी चबूतरे पर या पीपल या बरगद के वृक्ष के नीचे। ज्यादातर मंगल अवसरों पर एकल गायन किया जाता है। एकल गायन में कलाकार गाथा के विषय और प्रसंगों के हिसाब से अपनी आवाज में उतार-चढ़ाव और मध्यम एवं तेज स्वर और गति लाकर प्रभाव पैदा करता है।

गाथा गायक अक्सर गायन के दौरान अपने साथ सुर मिलने के लिए एक हारमोनियम या ताल पर गाने के लिए एक ढोलक रखता है। इन्हीं के जरिए वह श्रोताओं के समक्ष ध्वनि प्रभाव उत्पन्न करता है। ध्वनि प्रभाव को उत्पन्न करने के लिए पहले ओरनी नाम का एक वाद्ययंत्र का प्रयोग गाथा गायक द्वारा किया जाता था, लेकिन अब यह वाद्य लुप्तप्राय है। ओरनी एक तारा जेसा वाद्ययंत्र था। कहा जाता है कि ओरनी से ज्यादातर कोमल ध्वनि निकलती थी। आज ओरनी की जगह हारमोनियम ने ले लिया है और ध्वनि प्रभाव के लिए ज्यादातर एकल गायक हारमोनियम का ही प्रयोग करते हैं।

सामूहिक गायन:- लोक गाथा राजा सलहेस के सामूहिक गायन की प्रवृति एकल गायन के मुकाबले अब ज्यादा प्रबल है। इसमें कई गायक सारंगी, बांसुरी, शहनाई, क्लारनेट, झाल, किरताल, ढोलक, नगाड़ा, हारमोनियम आदि अन्य सहज उपलब्ध वाद्ययंत्रों के सुर और ताल पर लोक गाथा राजा सलहेस के प्रसंगों का गायन करते हैं। सुर और ताल दोनों की उपलब्धता की वजह से इसके रस अत्यधिक कर्णप्रिय हो जाते हैं।

एकल या सामूहिक दोनों ही तरह के गाथा गायन में मुख्य रूप से लोक गाथा राजा सलहेस के चार अध्यायों का गायन किया जाता है, जिन्हें किला अध्याय भी कहा जाता है। ये चार अध्याय हैं- महिसौथा किला, बाघगढ़ किला, योगिनी किला और पकड़िया किला। वैसे मधुबनी के लोक गाथा गायक बिसुनदेव पासवान इसके सात अध्याय बताते हैं, जिनका गायन सात दिनों में संपन्न किया जाता है।

मंच पर लोकनाट्य

लोक-मनोरंजक तत्वों की बहुलता के साथ लोकनाट्य राजा सलहेस का मंचन सलहेस गाथा गायन के उपरोक्त स्वरूपों पर ही आधारित है। मंचन के लिए आमतौर पर चौकियों की मदद से ऊंचा मंच बनाया जाता है या किसी ऊंचे चबूतरे पर नाच का मंचन किया जाता है। मंचन से पहले देवी-देवताओं और दिशाओं का सुमिरन किया जाता है और समाजी बंधन गीत या सुमिरन गीत गाते हैं। मंचन का समापन भी ज्यातार सुमिरन गीत के जरिए ही किया जाता है। मंचन से पूर्व वाद्ययंत्रों के द्वारा विविध ध्वनि निकालकर और सुमिरन के जरिए लोक को मंचन का साक्षी बनने हेतु आकर्षित करने का काम भी किया जाता है।

मंचन का विषय अक्सर लोकगाथा का पकड़िया किला होता है। मधुबनी और आसपास के इलाकों में ज्यादातर नाटकों का मंचन इसी अध्याय पर आधारित होता है। मंचन शुरू होता है माता भगवती द्वारा राजा सलहेस को दिए गए स्वप्न से, जिसमें माता भगवती उन्हें

पकड़िया गढ़ की फुलवारी देखने हेतु तत्पर करती हैं। सलहेस पकड़िया गढ़ की फुलवारी पहुंचते हैं और सो जाते हैं।

पकड़िया गढ़ की राजकुमारी चंद्रावती सलहेस के प्रति प्रेमांध है। सलहसे द्वारा उनके प्रणय निवेदन को अस्वीकार करने पर चंद्रावती कई गलत आरोपों में सलहेस को जेल में डलवा देती है, हालांकि बाद में चंद्रावती अपने पिता राजा कुलेश्वर से कहकर उसे अपने महल की पहरेदारी में लगवा देती है। इसका जिम्मा मोकामा के राजा चूहड़मल का था। कुलेश्वर के फैसले से नाराज चूहड़मल बदला लेना चाहता है और वह राजकुमारी के वस्त्र आभूषण चुरा लेता है। इस चोरी का आरोप सलहेस पर लगता है। कुलेश्वर दोबारा सलहेस को जेल में डाल देते हैं। इसके बाद सलहेस की अन्य प्रेमिका दौना मालिन किस प्रकार सलहेस को पकड़िया गढ़ के राजा कुलेश्वर के चुंगल से छुड़वाती है और किस प्रकार चंद्रावती विवश होकर अपनी ड्योढ़ी से सलहेस को अपने से दूर जाते हुए देखती रह जाती है, जैसे विविध प्रसंग जो वीर रस, प्रेम रस और विरह आदि के भावों से परिपूर्ण है, प्रेक्षक को अलग-अलग भावों में भिंगोता रहता है।

लोक गाथा या लोकनाट्य राजा सलहेस के मंचन के दौरान इसके पात्र स्वयं ही अपना परिचय देते हैं। जैसे मंच पर राजा सलहेस अपना परिचय इस रूप में देते हैं-

सलहेस राज महिसौथा गादीघर हमर लगैअ
जाति दुसाध कुलके बालक हम लगैछी
हमरा स छोट लगैअ मोतीराम दुलरा
हुनको स छोट लगैअ बबुआ बुधेसर

आमतौर पर इस तरह के मंचन में सूत्रधार का चरित्र पात्रों से परिचय करवाता है, लेकिन सलहेस नाच में ऐसा नहीं है। यहां हर पात्र ऊंचे स्वर में अपना परिचय खुद देता है और यह परिचय भी कुछ इस तरह से होता है कि वह गीतीमय काव्य जैसा लगता है। इस दौरान ध्वनियों की मदद से प्रभाव पैदा किया जाता है। कई बार पदों एवं गद्यों की आवृति भी मिलती है। अपने निजी जीवन में सादे कपड़ों में जीवन यापन करने वाले कलाकार मंच पर चटक रंग वाले वेश-भूषा का प्रयोग करते हैं, जो अक्सर किसी नृत्य संगीत के परिधान बेचने वाले दुकानदार से किराए पर लाई गई होती हैं। परिधानों में केवल राजा और राजकुमारियों को ही राजसी वस्त्र में दिखाया जाता है, अन्य कलाकार अपने सामान्य वस्त्रों में दिखते हैं। उनकी टोपी और हथियारों से उनके चरित्र का पता चल जाता है या प्रेक्षक सहज बुद्धि से जान लेता है कि अमुक किरदार कौन है। पशु-पक्षियों के किरदारों के लिए सामान्य तौर पर मुखौटे का प्रयोग किया जाता है।

एकल गायन की तरह मिथिलांचल में राजा सलहेस लोकगाथा के एक मंचन की परंपरा भी रही है, हालांकि इसका अनुशीलन ज्यादातर गाथा-गायक के द्वारा गाथा-गायन के समय ही किया जाता है। इसमें मंच पर गाथा-गायक किसी एक वाद्ययंत्र ढोलक, मांदर, हारमोनियम या करताल का इस्तेमाल करता है ताकि गाथा के प्रसंगों के गायन के दौरान उसके उतार-चढ़ाव को मदद मिल सके और इससे प्रक्षकों की उत्सुकता को भी बल मिलता है। मधुबनी में लोक कला के पुराने जानकारों के मुताबिक इसके लिए पहले ओरनी वाद्ययंत्र का प्रयोग होता था, जो अब लुप्त हो चुका है।

सामान्यतय: मंचन के संवाद में काव्यात्मकता होती है, इसलिए उनकी अदायगी में संगीत की प्रधानता हो जाती है। संगीत का प्रभाव हारमोनियम, बांसुरी, शहनाई, क्लारनेट, ड्रम, ढोलक, मृदंग, मानर और नगाड़ा आदि से प्रसंग के मुताबिक ध्वनियां निकालकर बढ़ाया जाता है। आमतौर पर करुण प्रसंगों में सारंगी, शहनाई, श्रृंगारिक प्रसंगों में बांसुरी या शहनाई और वीर रस वाले प्रसंगों में क्लारनेट, नगाड़े, ढोलक, मृदंग का प्रयोग किया जाता है। मंच पर जेनरेटर की मदद से बिजली की व्यवस्था की जाती है और हैलोजेन से मंच और उसके आसपास का इलाका रोशन होता है। जब जेनरेटर का चलन नहीं था, तब इसके लिए मशाल और फिर पेट्रोमेक्स उपयोग में लाया जाता था।

ii. आधुनिक सलहेस नाटक

मिथिलांचल में लोकनाटकों का मंचन काफी पुराना है, जिसमें विद्यापति नाच से लेकर धार्मिक कथाओं तक को नाटक का आधार बनाया गया है। लेकिन, सलहेस नाच का आधुनिक कलामंचों पर आए बहुत समय हो गया हो और उसमें बहुत प्रयोग हुए हों, ऐसा नहीं दिखता है।

राजा सलहेस के कथानकों पर बहुत कम ही नाटक लिखे गए हैं। संभवत: सलहेस के कथानकों को आधार बनाकर सबसे पहला नाटक बिरबल दास ने लिखा, जिसका शीर्षक था 'श्री सुरमा सलहेस चरित नाटक'। बिरबल दास के बाद राजगीर प्रसाद तथा लक्ष्मी नारायण प्रसाद श्रीवास्तव ने 'श्री सुरमा सलहेस चरित नाटक' शीर्षक नाम से नाटक लिखा। इसी कड़ी में 1990 में

तीसरा प्रमुख नाटक 'राजा सलहेस' रोहिणी रमण ने हिन्दी में लिखा, संभवत: राजा सलहेस पर लिखा यह पहला नाटक है। इस नाटक की प्रस्तावना में रोहिणी रमण जी ने यह स्वीकार किया है कि उन्होंने स्व. मणिपद्म जी की पुस्तक को आधार बनाकर नाटक की रचना की है। उन्होंने लिखा है कि 'स्व. मणिपद्म जी का हम आजीवन आभारी रहेंगे, जिनकी पुस्तक की प्रेरणा से लोककथा को नाटक स्वरूप देने का विचार मन में आया।'

चौथा नाटक डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन ने रेडियो नाटक के तौर पर 'सलहेस' लिखा। उन्होंने नाटक के शुरू में ही लिखा कि आज के संदर्भ में सलहेस जैसे राष्ट्रभक्त, लोरिक जैसे लोक-कल्याण को समर्पित वीर एंव बसावन जैसे वीर और श्रृंगार को संतुलित करने वाले चरित नायकों की प्रस्तुति सान्दर्भिक ही मानी जाएगी। इनके अलावा डॉ. नरेंद्र ने राजा सलहेस, रंगकर्मी कुणाल ने कुसुमा-सलहेस और श्याम भास्कर ने गीतिनाट्य राजा सलहेस लिखा, जो उल्लेखनीय है।

यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि डॉ. प्रफुल्ल कुमार मौन के अपने नाटक का केंद्र राजा सलहेस के समय के जनपदों के बीच संघर्ष को रखा है और सलहेस को उनका नायक बताया है। डॉ. नरेंद्र के नाटक का विषय सलहेस का उनकी जनता के प्रति प्रेम है, जन-संघर्ष है, तो कुणाल ने सलहेस की सामूहिक चेतना पर बल दिया है। श्याम भास्कर के नाटक में सलहेस के प्रकृति प्रेम पर जोर है। इनसे पहले लिखी रचनाओं, जिसमें गिरबल

दास, राजगीरी एवं लक्ष्मीनारायण के नाटक महत्वपूर्ण हैं। उनमें सलहेस लोकनाट्य की छाप पूरी तरह से दिखती है। इसमें सलहेस नाट को ही मुख्य आधार बनाया गया है।

सलहेस नाटक का मंचन

लोकनाट्य राजा सलहेस के मंचन का दो स्वरूप मिथिलांचल समेत बिहार के अलग-अलग हिस्सों में मिलता है। पहला, परंपरागत मंचन और दूसरा आधुनिक नाटक।

परंपरागत मंचन:- मिथिलांचल में ग्रामीण क्षेत्रों में मुख्य गाथा और उसके विस्तार का ग्रामीण नाट्य दलों द्वारा परंपरागत तरीके से मंचन किया जाता है। ज्यादातर नाच पार्टियों से जुड़े कलाकार इसका मंचन करते हैं। विविध कारणों से अब नाच पार्टियों की संख्या तेजी से सिमटती जा रही है।

आधुनिक नाटक:- राजा सलहेस की मुख्य गाथा को आधार बिहार के रंगकर्मियों, संस्कृतिकर्मियों और लेखकों ने नाटक लिखे और उनका मंचन किया। जैसे-1984 में सुरेश पासवान के निर्देशन में दरभंगा में डॉ. नरेंद्र द्वारा राजा सलहेस पर लिखित नाटक का मैथिली और हिन्दी में मंचन हुआ।

1997 में कुणाल के निर्देशन में पटना 'कुसुमा सलहेस' नाटक का मंचन हुआ और 1997 से 1999 तक इसके कई मंचन पटना और भुवनेश्वर में हुए। 1999 में श्याम भास्कर द्वारा तैयार गीतिमय नाट्य 'राजा सलहेस' की प्रस्तुति हुई। इसमें पारंपरिक धुन और पारसी थियेटर की संगीतात्मकता दोनों मिलती है। 2008 में मधुबनी की संस्था जमघट ने जटाधर पासवान के निर्देशन में राजा सलहेस नाटक का मंचन किया, जिसमें मूल कथा में कुछ बदलाव लाकर तैयार किया गया था। इनके अलावा रोहिणी रमण झा और संजय झा के नाट्यलेखों के भी मंचन की जानकारी मिली है।

9. सलहेस कलाकारों की भौगोलिक उपस्थिति

मधबनी में सलहेस नाच पार्टियों से जुड़े कलाकारों की भौगोलिक उपस्थिति का पता लगाने से पूर्व इस शहर की भौगोलिक स्थिति और चौहद्दी की जानकारी लेना महत्वपूर्ण है। मधुबनी

की चौहद्दी इस प्रकार है। इसके उत्तर में बिहार और नेपाल की सीमा है और दक्षिण में दरभंगा जिला, पूरब में सुपौल जिला और पश्चिम में सीतामढ़ी जिला। इस शहर का कुल क्षेत्रफल करीब साढ़े तीन हजार वर्ग किलोमीटर है।

मधुबनी में नदियों का जाल बिछा है, जो बरसात के दिनों में हर साल इस इलाके में तबाही लाती हैं। इनमें कोशी, कमला और बागमती तीन प्रमुख नदियां हैं। इनके अलावा बलान, भूतही, गेहुआं, करेह, सुपेन, त्रिशुला, जीवछ और अधवारा जैसी छोटी नदियां भी हैं, जो बरसात के समय उग्र रूप धारण कर लेती हैं। इनमें दो नदी, क्रमश: कोशी और छोटी बागमती मधुबनी की पूर्वी और पश्चिमी सीमा बनाती हैं।

नदियों के इस जाल के बीच मधुबनी में सलहेस नाच कलाकारों को खोजना दुरूह कार्य है। इसकी तीन बड़ी वजहें हैं।

पहला, नदियों द्वारा हर साल मचने वाली भारी तबाही और आजीविका की तलाश में मधुबनी के नदी तटों और कछारी इलाकों में रहने वाले ज्यादातर लोग बिहार से हर साल उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब समेत कई अन्य दूसरे राज्यों में पलायन करते हैं। पलायन करने वाले लोग अक्सर खेतिहर मजदूर, मजदूर और छोटे किसान होते हैं। इनमें नाच कलाकार भी शामिल हैं। अक्सर बरसात के बाद जब बाढ़ का पानी उतर जाता है, तब दुर्गापूजा-दशहरा, दिवाली और छठ पूजा से पूर्व ये अपने-अपने घरों को लौटते हैं और सलहेस नाच का मंचन करते हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय हो जाती है।

दूसरा, अगर कहीं किसी गांव में सलहेस नाच पार्टी है, तो उसके कलाकार एक ही गांव के हों, यह जरूरी नहीं है। अलग-अलग गांवों के कलाकारों का संयोजन करके मैनेजर प्रस्तुतिकरण हेतु नाच पार्टी का गठन करता है। इनमें कई कलाकार ऐसे भी होते हैं, जिन्हें मंचन का कोई अनुभव नहीं होता या उन्हें सीखने हेतु मंच पर स्थान दे दिया जाता है। बहरहाल, इसका संयोजन मुख्य रूप से दुर्गापूजा या दशहरा, दिवाली और छठ पूजा के मौके पर होता है।

और तीसरी वजह, अक्सर नाच पार्टियों से जुड़े मैनेजर अपने प्रस्तुतिकरण के आर्थिक आधार पर या साटा की रकम के हिसाब से अपने सामाजिक-आर्थिक समीकरणों और आपसी सबंधों को आधार बनाते हुए नाच पार्टियों का गठन करते हैं, जिसमें नए-पुराने कलाकारों की आवाजाही बनी रहती है।

जाहिर है, इन स्थितियों में वास्तविक लोक-कलाकार की पहचान मुश्किल हो जाती है, क्योंकि यह पता लगाना आसान नहीं होता है कि जिस कलाकार को नाच पार्टी का मैनेजर आपके सामने प्रस्तुत कर रहा है। वह वाकई लोक-कलाकार है या नहीं। इन लोक-कलाकारों की पहचान दुर्गापूजा-दशहरा, दिवाली या छठ पूजा के समय ज्यादा संभव है। इन मौके पर ज्यादातर लोक-कलाकार ही मंचों पर दिखते हैं, क्योंकि उनके द्वारा निभाए गए किरदार ही उनकी पहचान भी होती है।

इन कलाकारों तक पहुंचने का सबसे बढ़िया माध्यम है राजा सलहेस के लोकगाथा गायकों तक पहुंचना। राजा सलहेस के पुराने लोक गाथागायकों की संख्या उंगलियों पर है। यहां पुराने से तात्पर्य उन गाथा गायकों से है, जिनके पास राजा सलहेस लोकगाथा का संपूर्ण पाठ उपलब्ध हो। पटना के जाने-माने रंगकर्मी हसन इमाम और दरभंगा के रंगकर्मी अविनाश

चंद्र मिश्र और दलित लोकसाहित्य पर कई पुस्तकें लिखने वाले दरभंगा के ही बुचरू पासवान ने चिकना के सलहेस कलाकार और लोकगाथा गायक बिसुनदेव पासवान का नाम प्रस्तावित किया। रंगकर्मी अविनाश चंद्र मिश्र ने लोकगाथा गायक की जानकारी दी, जिनका नाम गंगाराम है और वे नेपाल से सटे मधुबनी के हरलाखी क्षेत्र के उमगांव में रहते हैं। इसी तरह मधुबनी के रंगकर्मी महेंद्र मलंगिया, जटाधर पासवान ने भी गंगाराम के नाम का प्रस्ताव किया।

बिसुनदेव पासवान, लोक गाथागायक:-

मधुबनी के घोघरडीहा प्रखंड के चिकना गांव में बिहार के जाने-माने सलहेस लोकगाथा गायक बिसुनदेव पासवान रहते हैं। गांव के शुरू में ही पासवानों, दुसाधों की टोली है। उसी टोली में बिसुनदेव पासवान रहते हैं। पूरे गांव में किसी से भी पूछने पर उनका पता मिल जाता है। मधुबनी शहर से उनके गांव में पहुंचकर उनसे मुकालात की तीन असफल कोशिशों के बाद अपने चौथे प्रयास में उनसे मिलना संभव हो पाया। उनके संपर्क का एकमात्र साधन उनका मोबाइल फोन है, जो उनके पास नहीं होता, बल्कि उनके घर पर होता है और अक्सर उस पर बात करना आसान नहीं होता है। बहरहाल, अपनी चौथी कोशिश में बिसुनदेव पासवान से मिलना संभव हो पाया।

बिसुनदेव पासवान एक ऐसे लोकगाथा गायक हैं, जो न केवल कई नाच पार्टियों का हिस्सा रहे हैं, बल्कि सलहेस कलाकारों की तीन पीढ़ियों को उन्होंने बहुत करीब से देखा है। एक वह पीढ़ी जिसके कलाकार अब इस दुनिया में नहीं हैं या इतनी बुजुर्ग है कि वह मंचन नहीं करती। उनके अपने समकक्ष कलाकार, जो अलग-अलग टोली में हैं और कलाकारों की युवा पीढ़ी।

सलहेस नाच पार्टियों और उनसे जुड़े कलाकारों की मौजूदा स्थिति को लेकर बिसुनदेव पासवान अत्यंत ही चिंताजनक हालात पेश करते हैं। बिसुनदेव पासवान के मुताबिक, पुरानी पीढ़ी के कलाकार जिन्होंने राजा सलहेस के नाच को अपना जीवन समर्पित कर दिया, उनमें से शायद ही कोई अब बचा हो। इस समय जो सलहेस कलाकारों की पीढ़ी है, उनमें राजा सलहेस नाच को लेकर गंभीरता देखने को नहीं मिलती है और युवा पीढ़ी इस नाच परंपरा से मुंह मोड़ रही है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि आमतौर पर नाच से जुड़े कलाकारों को सम्मान नहीं मिलता है और उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है। लोग उनको कलाकार कम मानते हैं। उन्हें नचनिया, बजनिया या लौंडा कहकर अपमानित करते हैं। नाच कलाकारों को उतना पारिश्रमिक भी नहीं मिलता है, जिससे वे अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण कर सकें। इस वजह से युवा पीढ़ी ने एक तरह से इसे त्याग दिया है। यानी कलाकारों को न तो समाज में सम्मान मिलता है और न ही पैसा, तो वे इसका त्याग क्यों नहीं करें?

आश्चर्य की बात तो यह है कि मधुबनी शहर से सटे मलंगिया गांव में रहने वाले संस्कृतिकर्मी और रंगकर्मी महेंद्र मलंगिया ने इस बात को स्वीकार किया। उन्होंने अपना अनुभव हमसे बांटा। जब वह मिथिला की लोकनाट्य परंपरा पर शोध कर रहे थे, तब उन्होंने राजा सलहेस की परंपरा के कलाकारों पर भी अध्ययन किया था। लगभग दो दशक पूर्व के अपने अध्ययन में उन्होंने पाया था कि सलहेस कलाकार किस तरह से बदहाल हैं। बातचीत के क्रम में उन्होंने कहा कि जो कलाकार संस्कृति का बोझ वहन करता है, उसकी स्थिति यह होती है कि वह दिन में माड़-भात खाता हो या नाच पार्टी के कलाकार उन्हें मंचन के दौरान किसी बथान जैसी जगह पर रखता हो, तो उससे उसकी माली हालत का अंदाजा लगाया जा

सकता है। ऐसी हालत में धीरे-धीरे राजा सलहेस से जुड़ी नाच पार्टियां खत्म हो गईं और जो बचे-खुचे हैं, वे किसी भी तरह से अपना जीवन-यापन करने के लिए विवश हैं।

बिसुनदेव पासवान और हरलाखी क्षेत्र में रहने वाले गंगाराम ने भी इस बात को स्वीकारा कि अब राजा सलहेस नाच परंपरा के कलाकार न केवल कम हैं। उनकी पार्टियों की संख्या उंगलियों पर रह गई है। अब कोई इसे सीखना भी नहीं चाहता, क्योंकि अब नाच सिर्फ दशहरा-दुर्गापूजा, दिवाली और छठ पर्व तक सीमित हो गया। इसमें भी अवसर घट गए हैं।

सलहेस कलाकारों की स्थिति का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है- गंगाराम के चार बेटे हैं, लेकिन उनमें से किसी को भी उन्होंने सलहेस की गाथा नहीं सीखायी और वे चारों आज कोई अन्य काम कर रहे हैं। बिसुनदेव पासवान भी अपने बच्चों को नाच परंपरा या गाथा गायन परंपरा से दूर रखना चाहते हैं, क्योंकि इसमें उन्हें उनका कोई भविष्य नहीं दिखता है। बिसुनदेव बताते हैं कि उनके क्षेत्र में पहले सलहेस नाच की कई टीमें थीं, जो धीरे-धीरे खत्म हो गईं और फिर वहां कोई नई टीम नहीं बनी। बचे-खुचे कलाकार जिसका वे कभी-कभी नाच हेतु संयोजन करते हैं, उनमें से भी ज्यादातर कलाकारों ने नाच छोड़ दी या वे इतनी रकम मांगते हैं, जिसकी पूर्ति करना संभव नहीं होता।

चिकना कैसे पहुंचें?

चिकना मधुबनी का देहाती इलाका है। पटना से मधुबनी आमतौर पर एनएच 27 के रास्ते पहुंचा जाता है। इस पर सकरी चौक से बाएं पश्चिम मुड़ने पर मधुबनी और एनएच 27 पर ही आगे बढ़ने पर फुलपरास पहुंचते हैं। फुलपरास के करीब तीन चार किलोमीटर पहले ही एक खोपा चौक आता है। इस चौक से पूर्व करीब सात किलोमीटर एक पतली सड़क के रास्ते चलने पर चिकना गांव पहुंचा जा सकता है। आप दरभंगा से ट्रेन के जरिए भी चिकना गांव पहुंच सकते हैं, चिकना में ट्रेन का हॉल्ट बना है।

गंगाराम, लोकगाथा गायक:-

उत्तर-पश्चिमी मधुबनी में नेपाल से सटती बिहार की सीमा पर हरलाखी क्षेत्र के उमगांव में लोकगाथा गायक गंगाराम को कौन नहीं जानता है। न केवल उमगांव, बल्कि समूचे हरलाखी क्षेत्र में या बसोपट्टी क्षेत्र में लोकगाथा राजा सलहेस के सबसे बड़े जानकार गंगाराम माने जाते हैं। पश्चिमी मधुबनी में सलहेस कलाकारों की उपस्थिति पर गंगाराम ने भी अमूमन वही बातें कहीं, जिसे रंगकर्मी महेंद्र मलंगिया या बिसुनदेव पासवान ने विस्तारपूर्वक बताया था।

जिस समय गंगाराम से मुलाकात हुई, उस समय वह अस्वस्थ थे और बामुश्किल बोल पा रहे थे, लेकिन ऐसी स्थिति में भी उन्होंने कई महत्वपूर्ण जानकारियां दीं। सबसे महत्वपूर्ण जानकारी जो उन्होंने दी, वह यह थी कि पश्चिमी मधुबनी और उत्तर पश्चिमी मधुबनी में पुराने सलहेस कलाकार अब एक भी नहीं हैं। बसोपट्टी और हरलाखी क्षेत्र में पहले सलहेस नाच पार्टी हुआ करती थी, लेकिन अब वहां एक दो कलाकार हैं, नाच पार्टी नहीं रही। हां, कुछ लोग दुर्गापूजा से पहले मिलकर नाच पार्टी बना लेते हैं, और ऐसा वह स्वयं भी करते हैं, लेकिन राजा सलहेस नाच की कोई विशेष जानकारी उनके पास नहीं है।

उन्होंने बताया कि अगर राजा सलहेस नाच पर पुख्ता और विशेष जानकारी चाहिए, तो उनके साथ नेपाल सीमा पार हरवाड़ा चलना पड़ेगा जहां सलहेस नाच के पुराने कलाकार

रहते हैं और जिन्होंने आजीवन उसका मंचन किया है। यह पूछने पर कि क्या उन्हें उमगांव बुलाया जा सकता है? उनका कहना था कि खराब सड़कों की वजह से उन्हें यहां बुलाना संभव नहीं है, बल्कि हमें ही सीमा पार करके उन तक पहुंचना होगा। वे कलाकार इस वजह से भी इस पार (नेपाल सीमा के पार) नहीं जाते, क्योंकि उनकी उम्र में खराब सड़कों पर दस बारह किलोमीटर की यात्रा उनके लिए संभव नहीं है, खासतौर पर गर्मी के मौसम में।

गंगाराम से जब यह सवाल पूछा गया कि आखिर क्यों सलहेस नाच पार्टियां खत्म हो गईं या कलाकारों की संख्या तेजी से सिमटती जा रही है? उन्होंने उत्तर देने की बजाय मुझसे ही सवाल पूछा। कहा कि किसी को नाच पार्टी से जुड़ने या सलहेस की लोकगाथा को जानने में क्यों अपना समय व्यर्थ करना चाहिए? वे आगे कहते हैं कि जब घर में अन्न का दाना नहीं हो, तब मजदूरी करनी पड़ती है ताकि हम परिवार का पेट पाल सकें।

यह पूछने पर कि केंद्र सरकार और राज्य सरकार ने कलाकारों के लिए कई स्कीम चलाई है, पेंशन की व्यवस्था की है, वे आश्चर्यचकित हो जाते हैं। गंगाराम कहते हैं कि कौन सी स्कीम या कौन सा पेंशन, उन्हें किसी की जानकारी नहीं है और न ही उन्हें आजतक किसी ने इस बारे में जानकारी दी है। गंगाराम कहते हैं कि बाबूसब (सरकारी अफसरों) को इसकी जानकारी होगी, लेकिन वे लोग कलाकारों के फायदे की बात उनतक कहां पहुंचाते हैं। रही बात नाच पार्टियों की, तो मधुबनी में बैठे नाच पार्टियों के मैनेजर दुर्गापूजा या अन्य अवसरों पर किसी भी कलाकार को अपने साथ जोड़ लेते हैं और नाच पार्टियां बना लेते हैं। जाहिर है, इससे राजा सलहेस के प्रति उनकी श्रद्धा और सोच की पोल भी खुल जाती है।

उमगांव कैसे पहुंचें

मधुबनी शहर से करीब 32 किलोमीटर दूर उमगांव पहुंचने का सबसे आसान और नजदीकी रास्ता है मधुबनी, राजनगर, बाबूराही, खुटौना रोड से नजिरपुर कलुआही रोड होते हुए कलुआही मोड़ और वहां से बसोपट्टी-हरलाखी रोड के रास्ते एनएच-227 तक पहुंचना। उमगांव में ही कलुआही-बसोपट्टी-हरलाखी रोड एनएच 227 से मिलती है। मधुबनी से बस या फिर निजी साधन के जरिए उमगांव पहुंचा जा सकता है।

सलहेस नाच पार्टियां

मिथिलांचल के रंगकर्मियों और संस्कृतिकर्मियों के माध्यम से कई नाच पार्टियों की जानकारी मिली है। इनमें सबसे प्रमुख जयनगर स्थित बेतौनहा की नाच पार्टी है। इनके अलावा एक नाच पार्टी निर्मली में है। पश्चिम-उत्तर मधुबनी के हरलाखी क्षेत्र के करुणा गांव और बसोपट्टी, पूर्वी मधुबनी के मैबी और अगड़गड़हा गांव, उत्तर मधुबनी में राजनगर इलाके में नाच पार्टी का पता चला है। सुपौल के अगड़गड़हा कसहा, निर्मली और दरभंगा के रत्नोपट्टी, बाजितपुर और सनखेड़ा गांव में भी सलहेस नाच पार्टी और कलाकारों की जानकारी मिली है।

इनमें बेतौनहा, जयनगर की टीम में कई कलाकार एक दशक और कुछ कलाकार दो दशक से भी ज्यादा समय से सलहेस नाच या लोकनाट्य का मंचन कर रहे हैं। इनके ठीक उलट मैबी के छोटे पासवान की टीम और अगड़गड़हा, कसहा, सुपौल की टीम में युवा कलाकारों की संख्या सबसे ज्यादा है। मैबी टीम के मुखिया छोटे पासवान ने ईमानदारी से इस बात को स्वीकार किया कि उनकी टीम सलहेस नाच कर लेती है, उसे पूरी तरह से जानती नहीं है और वे सीख रहे हैं।

वे और उनकी टीम के बाकी सदस्य सलहेस नाच क्यों सीख रहे हैं? इस सवाल पर छोटे पासवान का कहना था कि वे अबतक रानी सारंगा, कुमर-बृजभान, शीत बसंत जैसे नाटक करते रहे हैं, लेकिन करीब पांच वर्ष पूर्व उन्होंने पहली बार सलहेस नाच के बारे में विस्तार से जाना। यह उनके अपने समाज का नाच था। वे सलहेस महाराज के इस बात से ज्यादा प्रभावित हुए कि उन्होंने समाज में सबको सम्मान दिलाने के लिए काफी कुछ किया था। दरभंगा में भी कुछेक नाच पार्टियों का पता चला है। इन कलाकारों तक पहुंच पाना आसान नहीं है क्योंकि ज्यादातर समय दूसरे राज्यों में मजदूरी करते हैं या अन्य रोजगार से जुड़े होते हैं। गांवों में उनकी उपलब्धता इस बात पर निर्भर होती है कि उनका मालिक उन्हें अपने गांव जाने की इजाजत देता है या नहीं। फिर भी, इन कलाकारों के विस्तृत सर्वेक्षण की जरूरत है।

10.सलहेस कलाकारों की अपुष्ट सूची

सरस्वती नाटक कला परिषद
अगरगड़हा कसहा, सुपौल

दुखन मुखिया, नाच पार्टी मालिक (एक्टर, मां सरस्वती नाटक कला परिषद) उम्र- 33 साल, शिक्षा- 8वीं ग्राम- अगरगड़हा, पोस्ट, थाना- मरौना सुपौल-847408, बिहार संपर्क- 8969716280	नौथनी मुखिया, एक्टर उम्र- 50+ अशिक्षित ग्राम- कुसुमौल, थाना- मरौना सुपौल-847408, बिहार
मंगल जोकर, एक्टर उम्र- 40+ अशिक्षित ग्राम- मधेपुर, पोस्ट,थाना- मधेपुर मधुबनी, बिहार	रामपरवेश पासवान, नाल वादक (डायरेक्टर, मां सरस्वती नाटक कला परिषद) उम्र- 35 साल शिक्षा- 10वीं ग्राम- अगरगड़हा, पोस्ट, थाना- मरौना सुपौल-847408, बिहार
रविंदर राम, एक्टर उम्र- 36 साल ग्राम- अगरगड़हा, पोस्ट, थाना- मरौना सुपौल-847408, बिहार संपर्क- 9931653384, 9855772023	कामेश्वर राम, नगाड़ा वादक उम्र- 45 अशिक्षित ग्राम- अगरगड़हा, पोस्ट, थाना- मरौना सुपौल-847408, बिहार संपर्क- 9931653384
मंगल मुखिया, एक्टर उम्र- 27 साल शिक्षा- प्राइमरी ग्राम- अगरगड़हा, पोस्ट, थाना- मरौना सुपौल-847408, बिहार	रामउदगार राम, एक्टर उम्र- 26 साल शिक्षा- प्राथमिक ग्राम- अगरगड़हा, पोस्ट, थाना- मरौना सुपौल-847408, बिहार
कांशी राम, ड्रम प्लेयर, एक्टर उम्र- 27 साल शिक्षा- प्राथमिक ग्राम- कुसुमौल, थाना- मरौना सुपौल, बिहार	हीरा लाल, कार्नेट प्लेयर उम्र- 37 साल ग्राम- करहरा, थाना- मधेपुर मधुबनी, बिहार - संपर्क- 7250377903
चंदे दास,	प्रकाश मुखिया

ऑर्गन प्लेयर उम्र- 38 साल अशिक्षित ग्राम- अगरगड़हा, पोस्ट, थाना- मरौना सुपौल-847408, बिहार संपर्क- 7250377903	एक्टर, ग्राम- घोघरडीहा, पोस्ट घोघरडीहा मधुबनी, बिहार

सरस्वती सलहेस कंपनी
बेतौनहा, जयनगर, मधुबनी

महेश्वर पासवान म्यूजिशियन नाल, ड्रम एवं बैंजो प्लेयर मैनेजर (संपर्क- 8271501371) उम्र- 50 साल अशिक्षित ग्राम- बेतौनहा, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार	महेंद्र साव एक्टर उम्र- 35 अशिक्षित ग्राम- बेतौनहा, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार
डोमी पासवान गायक उम्र- 35 साल अशिक्षित बेतौनहा, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार	घूरन राम गायक उम्र- 40 साल अशिक्षित ग्राम- खतोका, सिरहा , नेपाल
महेंद्र पासवान, डांसर, एक्टर उम्र- 38 साल, अशिक्षित ग्राम- लक्ष्मीनिया, सिरहा, नेपाल	दिनेश पासवान नाल, बैंजो वादक उम्र- 30 साल अशिक्षित ग्राम- बेतौनहा, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार
देवेंद्र पासवान एक्टर, डांसर उम्र- 50 साल अशिक्षित ग्राम- बेतौनहा, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार	राजेंद्र पासवान, एक्टर उम्र- 40 साल अशिक्षित ग्राम- बेतौनहा, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार
श्रीप्रसाद पासवान गायक उम्र- 50 साल अशिक्षित ग्राम- इनरवा, थाना- सिरहा जिला- सिरहा, नेपाल	जोगिंदर पासवान, नाल बैंजो वादक उम्र- 45 साल अशिक्षित ग्राम- बेतौनहा, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार
देव सुंदर राम मुख्य गायक उम्र- 42 साल अशिक्षित ग्राम- मरान, थाना- सखोबा जिला- धनुषा, नेपाल	चंदर राम कर्नेट प्लेयर उम्र- 50 साल अशिक्षित ग्राम- लगमा, थाना- जद्दूकोहा जिला- धनुषा, नेपाल
गोलू पासवान एक्टर उम्र- 40 साल अशिक्षित ग्राम- बेतौनहा, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार	विनोद पासवान एक्टर, डांसर उम्र- 28 साल अशिक्षित ग्राम- बेतौनहा, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार
गौरी राम, एक्टर डांसर	गंगा राम नगाड़ा वादक

उम्र- 35 साल, अशिक्षित ग्राम- बेतौनहा, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार	उम्र- 45 साल अशिक्षित ग्राम- लगमा, थाना- जद्दूकोहा जिला- धनुषा, नेपाल
सतीश राम, गायक उम्र- 28 साल ग्राम- पोडमा, थाना- लदनिया मधुबनी, बिहार	दुखी राम एक्टर, गायक उम्र- 40 साल अशिक्षित ग्राम- बेला, पोस्ट- बेला, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार
संजय शाह डांसर उम्र- 28 साल ग्राम- पेट्रोलपंप, थाना- जयनगर जयनगर, मधुबनी, बिहार	

चिकना सलहेस टीम
चिकना, मधुबनी

बिसुनदेव पासवान गायक एवं अभिनेता उम्र- 48 साल अशिक्षित ग्राम, पोस्ट– चिकना, थाना- घोघरडीहा मधुबनी- 847402	अवध पासवान नाल वादक उम्र- 57 साल अशिक्षित ग्राम, पोस्ट– चिकना, थाना- घोघरडीहा मधुबनी- 847402
रामउदगार पासवान	हरिलाल पासवान

गायक, हारमोनियम वादक उम्र- 39 साल शिक्षा- इंटरमीडियट ग्राम, पोस्ट– चिकना, थाना- घोघडीहा मधुबनी- 847402	गायक, नाल वादक उम्र- 45 साल अशिक्षित ग्राम, पोस्ट– चिकना, थाना- घोघरडीहा मधुबनी- 847402
बेचन पासवान नाल-ढोलक वादक उम्र- 45 साल शिक्षा- 10वीं ग्राम- जयपट्टी, पोस्ट-चिकना थाना- घोघरडीहा मधुबनी-847402	